सक्कु गोचाली एक जुट हुई, प्रगतीशिल साहित्यम कलम चलाइ

थारू भाषक पहिला पत्रिका

गोचानी

२०६३

"कहाँ बाट हमार अग्रज हुक्र"

- वेपत्ता थारु नागरीक हुक्र
- सगुनलाल चौधरी, भिमबहादुर चौधरी छोटमोट चिनारी
- युवावर्ग हुकन के भुमिका
- महिला उत्पीडन के उद्भव व अन्त्य
- माघक शुभकामना
- कविता/मुक्तक

सहयोग रु १५/–

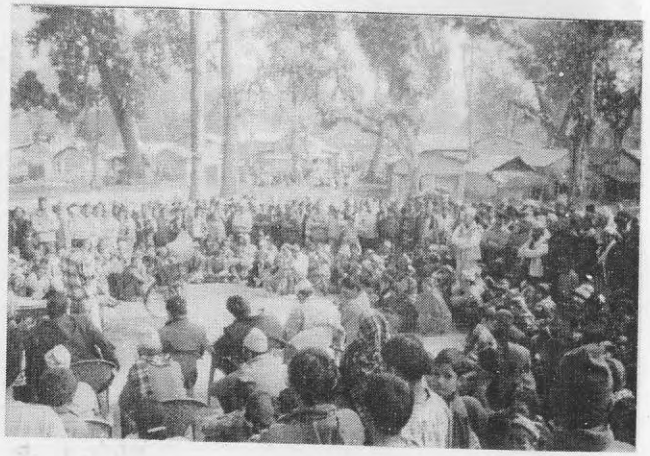

सक्कु गोचाली एक जुट हुई, प्रगतीशिल साहित्यम कलम चलाइ

थारु भाषक पहिला पत्रिका

गोचाली

२०६३

बर्ष ३५ **अंक १४**

ब्यवस्थापक व प्रकाशक
थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल
गोचाली परिवार २०२८

वार २०२८
ाल चौधरी
धरी बर्दिया
कृष्ण प्रसाद
ाहित्यकार,
्राहमणबादी
ार से लैस
के उप्पर नै
न्ती सत्ताके
ासिन काम
कनक गिर
भिमबहादुर
ु बेदप्रसाद
से घटनाह
अस्तक र
न अधिकार
संयुक्त प्रेस
द नेपाल

प्रधान सम्पादक – श्री जग्गुप्रसाद चौधरी
सम्पादक परिवार – श्री मोति कुमार चौधरी
श्री निरञ्जन कुमार चौधरी
श्री सुखिराम चौधरी

सल्लाहाकार परिवार – श्री महेश चौधरी
श्री कृष्णराज सर्वहारी
श्री राम चरण चौधरी
श्री शुसिल चौधरी
श्री जित बहादुर चौधरी

कानुनी सल्लाहकार – श्री सन्तराम धरकटुवा

प्रचार प्रसार परिवार – श्री निरञ्जन कुमार चौधरी
श्री प्रेम प्रसाद चौधरी
श्री माया चौधरी
श्री श्रीराम चौधरी
श्री गोपाल चौधरी
श्री मानबहादुर चौधरी
श्री भागीराम चौधरी

अर्थ संकलन परिवार –

श्री कृष्ण कुमार चौधरी
श्री प्रेम प्रसाद चौधरी
श्री बुद्धिराम चौधरी
श्री शिव कुमार चौधरी

प्रेस विज्ञप्ती

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल गोचाली परिवार २०२८ के संस्थापक तथा तत्कालीन केन्द्रिय उपाध्यक्ष श्री सगुन लाल चौधरी लगायत केन्द्रिय सदस्य श्री भिम बहादुर चौधरी, रुपलाल चौधरी बर्दिया जिल्लाके जिल्ला सदस्य शिवचरण चौधरी भू.पु. जिल्ला अध्यक्ष कृष्ण प्रसाद थारु, सल्लाहाकार बेद प्रसाद चौधरी लगायत सक्कु थारु साहित्यकार, समाजसेवी, बुद्धिजीवी प्रगतिशिल, लेखक हुँकन आपन हिन्दु अति ब्राहमणबादी सामान्ती संस्कार निरङ्कुशताके अहंकार व सर्वसत्ता बादी विचार से लैस सामान्तवादी सत्ता आदिवासी जनजाति हुँकन मृत्यु सइयासे फे उप्पर नै उठदेना मानसिकता लेक वाकर विरुद्धम दिन्चेफे ब्वालबेर सामन्ती सत्ताके रक्षक तत्कालिन शाही सुरक्षफौज गिरफ्तार कैक बेपत्ता पर्ना जसिन काम निन्दनीय, अमानवीय अप्रजातान्त्रिक व घृणित काम हो। उहाँ हुँकनक गिर फ्तार विभिन्न मितिम हुइल रह। सगुनलाल चौधरी २०५८/९/१२,भिमबहादुर चौधरी २०५९/१/४, शिव चरण चौधरी २०५८, कृष्णप्रसाद थारु बेदप्रसाद चौधरी लगायत थारु नागरीक हुक्र सार्वजनिक नै हुइलक कारणसे घटनाह सार्वजनिक करकलाग नेपाल सरकारसे अनुरोध कै जाइता। अस्तक र राजनैतिकदल, नागरिक समाज, पत्रकार, वकिल, शिक्षक, मानव अधिकार वादी जसिन संघ संस्थासेफे सरकारहन दबाव दिहक लाग संयुक्त प्रेस विज्ञप्तीसे हार्दिक अनुरोध करती।

जग्गु प्रसाद चौधरी
महा-सचिव
थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मंच
नेपाल गोचाली परिवार २०२८

महेश चौधरी
अध्यक्ष
थारु बुद्धिजीवी परिषद नेपाल

गोचालिन अनुरोध

आरणिय गोचाली हुक्र अप्नेफे कथा कविता लेख रचना गित आदि विषयम कलम चलाइथी कलसे गोचाली पत्रिका मार्फत प्रकाशन करक चाहती हमार थे पठाई ।

ठेगाना :

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान
मञ्च नेपाल (गोचाली परिवार २०२८)
धधवार-४, बर्दिया
फोन नं. : ०८४-६२०१७८

सम्पादकीय

"हेराइल उ प्रतिभा हुकनके सम्झनाम"

थारु भाषा तथा साहितयम प्रगतिशील सृजनाके अनेक रंगीविरंगी फूल फूलैती थारु साहित्यहन सजैना, मलजल देक झकीझकाउ अजरार बनाक सुन्दर बनैती रलक हमार उ प्रतिभा हुकन आपन साम्ने नै घाखवेर हमन बहुत दुःख लागल बा, हमार हृदयम भारी घाउ बनल बा, आज हम्र उहाँ हुकनके सम्झनाम शोकाकूल बनल बाटी ।

वास्तबम उहाँ हुक्र प्रगतिशील लेखकके रुपमा परिचित हुइती शोषित पिडित गरीव किसान कमैया मजदुर जसिन वर्गीय रुपमा अन्याय म परल जनतनके पक्षम आपन कलम चलैती रलह । सामन्ती रुढीवाढी संस्कारहन बदल्क लौव प्रगतिशील समाजक कल्पनाके अगहवा बन्क समाजहन प्रगतिक डगर देखाए ख्वाजल रलह । असिन हमार थारु जाती भित्तर के प्रगतिशील प्रतिभाहुक्रन देख्क देशके सामन्ती संस्कारम बनल राज्य संचालन करुइया शासक हुक्र कब्बु घाख नै सेक्क उहाँ हुक्रमन अनेक किसिमके बहानाम पक्राउ, जेल, सजाय, हत्या ओ वेपत्ता बनैना काम कर्ल बा । यही क्रममं थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल (गोचाली परियार २०२८) के संस्थापक, बुद्धिजीवी, शिक्षा, प्रेमी, कुशल संगठन कर्ताके रुपमा परिचित तथा थारु सामाजके लोकप्रिय साहित्यकार श्री सगुन लाल चौधरी गोचाली परिवारके केन्द्रीय सदस्य भीम बहादुर चौधरी, रुपलाल चौधरी, बेदप्रसाद चौधरी, कृष्णप्रसाद थारु लगायत बहुतसे थारु साहित्यककार हुक्रन यी देशके शासन सत्ताके पहरेदार हुँक्र बेपत्ता बनैल वाट । अस्तहँक जोखन चौधरी, धनिराम चौधरी, जगत चौधरी, चित्र बहादुर चौधरी, शिव चरण चौधरी, मंगलप्रसाद चौधरी जसिन तमाम थारु युवकनके हत्या कैक थारु जाती उप्पर यी देशके सरकार भारी अन्याय अत्याचार कर्ल बा । असिन घृणित, अमानवीय, निन्दनीय तथा अप्रजातान्त्रिक व्यवहारके घोर विरोध कर्ति हत्या हुइल हमार गोचालीनक उचित क्षतिपूर्ति तथा बेपत्ता रहल गोचालीनक हालिसे हलि स्थिति सार्वजनिक कै दिहक लाग नेपाल सरकारसे अनुरोध कर्ति उहाँ हुक्रनके सम्झनाम एक घची शिर झुकैती ओ फे दोस्र आपन आत्माहन वल्गर बनाक उहाँ हुक्रनके देखाइल प्रगतिशील साहित्यिक सुन्दर फँटवम आपन कलम चलैना प्रतिज्ञा कर्ति थारु भाषक पहिला पत्रिका गोचाली अप्न हुकनके मैया बोक्क ढिल हुइदलसे फे चौदहवा अंक लेक प्रकाशित हुइल बा ।

यी पत्रिकाहन आपन अमूल्य समय देक लेख रचना पुगाक मदत करुइया थारु साहित्यकार हुँकन गोचाली परिवारके तर्फ से प्रगतिशील अभिवादन देती भविष्यम फे उहाँ हुकनके साहित्यिक सृजनाके कलम आकूर तिस्लार वन कना शुभ कामना दिह चाहती । अस्तहँक गोचालीहन आर्थिक, भौतिक नैतिक लगायत सक्कु किसिमके सहयोग करुइया किसिन, कमैया, मज्दुर, शिक्षक, विद्यार्थी वकिल, डाक्टर, पत्रकार, समाजसेवी, वुद्धीजीवी, संघ-संस्था, र ाजनैतिक दल, नागरिक समाज, महिला तथा पुरुष सक्कुजहन गोचाली परिवारके तर्फसे धन्यवाद देती भविष्यम फे आकुर सहयोगके आशा ओ भरोसा कर्ति अन्त्यम आदरणीय हमार उ हेराइल प्रगतिशील प्रतिभा हुकनके सम्झनाम एक चोट फे शिर झुकैती सम्पादकके कलम बन्द कर्ना अनुमति चाहती

धन्यबाद ।

"जय गोचाली परिवार"

विषय सूचि

क्र. सं.	विषय	पेज नं.
१.	गोचालीक अठोट	१-२
२.	युवा वर्ग हुकनके भुमिका	३-६
३.	कमैयक जिन्दगी	७-९
४.	जन आन्दोलनह बुझना सवालम	१०-१२
५.	सगुनलाल चौधरीक छोटकरी चिनारी	१३-१४
६.	महिला उत्पीडनके उदभव व अन्त्य	१५-२०
७.	हमार गोचाली भीम जी के छोटकरी चिनारी	२१-२४
८.	किसानके जीवन	२५-२६
९.	माधक शुभकामना	२७-२९
१०.	लोकतान्त्रीक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा ।	३०
११.	वेपत्ता थारु नागरिक हुँक्र	३२-४०
१२.	गोचालीक सहयोगी हुँक्र	४२-४५

गोचालिक अठोट

देश ओ समाज परिर्वतन कर्ना, गोचलीन्क अठोट बा
प्रगतीशील विचारसे प्रेरितहोक, आघ बढ्लक इतिहास बा
शोषित पिडित गोचालीन्क, मुक्तिक आवाज उठैती बा
पछगुरल समाजकलाग, चेतना फैलैना याकर सन्देश बा ॥

कबु गोचाली आर्थिक संकटम, कबु राजनैतिक दबाबम
गरीब दुःखीन्क सहाराहो गोचाली, खोब विचारकरी मनम
मजाबातह उल्टा सोंचदेना यीहाँ, चलनबा यी देशम
धनी जिमदारकेंल नेपाली रना, गरीबन् नै हुईना गन्तीम ॥

तब त संघर्षकर नै छोर्ल गोचाली हुँक, गोचालीन्क मुक्तिक लाग
कत्रा त वीर शहीद हुईल, देश ओ समाजक उज्वल भविष्यक लाग
आब हमार कन्धेम आइता, देशके स्वशासन प्रशासन चलाइक लाग

आपन मुक्तिक आवाज उठाइबेरफे, आतङ्ककारी बनादेना
संकटकालक बहानाम निहत्था, सर्वसाधारणक हत्या कर्ना
दबैना कोसिस बहुत हुइल यिहाँ, नेङती घुम्ती मनैन मर्ना
ना जानल शिक्षक विद्यार्थी, नाजानल छेग्री गैया चह्रैना ॥

अन्यायके विरुद्धम पंञ्चायतकालसे, जरम पाइल गोचाली
अड्ठाईस सालसे भषा संस्कृतिक, विकासकर्ति आइल गोचाली
गर्भिन कटाँहा डगरम कबु कबु, रह नुक गइल गोचाली
आजफे देश ओ समाज परिवर्तन कर्ना, अठोटले आइल गोचाली ॥

–मोती कुमार चौधरी
सिमरहवा, बर्दिया

शुभकामना

थारु जातिनक वर्का तिहवार माघ सक्रान्तीक उपलक्ष्यम थारु भाषा, साहित्य प्रति रुचि धर्ना व प्रगतिक लाग हरदम प्रयासर त सक्कु गोचालिन हार्दिक मंगलमय "शुभ कामना" ब्यक्त कर ति ।

सम्पादक

तथा थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मंच नेपाल

(गोचाली परिवार २०२८, बर्दिया)

युवा वर्ग हुकनके भूमिका

जबजब देशम अन्याय अत्याचार शोषण ब दमन बहरती जाइत तबतब उत्पिडित जनसमुदायके न्यायपुर्ण आवाज उथ पाछ और रुपम विस्फोट हुइति जाइत । जस्तके "वास्तबम नेपाल अर्धसामान्ति व अर्ध औपनिवेशिक देश हो । यहाँके शासन ब्यवस्था सामन्तवाद व साम्राज्यवादके निर्देशनम संचालित हुइलक तथ्य इतिहासके घटनाक्रमसे प्रष्ट बा । उह कारणसे नेपाल जसिन सामान्ति सत्ता संचालन हुइति रलक देशम प्रतिरोध व विस्फोटके श्रृखला बहरती जइना स्वभाविक हो । यहाँ हरेक प्रकारसे स्वाभ, इमान्दार जालझेल व षडयन्त्र कैक शोषण कर्ना लौव तरिका खोजति गैलक अवस्थाम आपन न्याय व समानताके लाग सक्कु देशवासी जनसमुदायहूक आधरभुत माग लेक आवाज उठैती आन्दोलनम भाग लेती बात । ओस्तक आपन जाती व समुदायक संरक्षण करक लाग सक्कु जातजाती हुक फे संर्घष करति वात । संघर्षके क्रमम सबसे पहिल सामान्त, दलाल पुँजीपति वर्ग व साम्राज्यवादी आक्रमणसे देशहन मुक्त कैक सक्कु क्षेत्रम समानुपातिक आरक्षणके अवधारणा कायम कर्ना उद्देश्यलेक थारु जनसमुदाय फे संर्घषके लाग वर्षौसे त्याग लगानी व बलिदानीपूर्वक आघ जैति बात । जहा सम्म सक्कु जनजाति हुक संर्घषम भाग लेहतिरह पर्ना बा ।

नेपालम वास्तविक अर्थसे जनचाहनाके अनुसारके काम हुई नैसेक्ना कलक यहाँके उच्चअहंकारवादी बाहुनवादी हुकनके मैखाऊ मै लगाऊ कना सामान्ति सोचाइके कारणसे हुइलक हो । ओस्तक नेपाल राष्ट्र व राष्ट्रियता के विषयम कौनो प्रकारके गम्भिरता देखाइ नै चाहना खाली आपन व्यक्तिगत स्वार्थपुर्ती केनाम केल चिन्तित रहना नै नेपाल व नेपालीके विकासके बाधक तत्तव हुकनके मुख्य भूमिका बा । युवावर्ग वास्तविक रुपम देशके कर्णधार हुइत । देश परिवर्तन, समाजपरिवर्तन कर्ना व संचालन कर्ना मुख्य भूमिका युवावर्गक हातपाखुराम रहत । यदि युवा वर्ग सचेत व सजग नै हुइ कलसे देशम कौनो प्रकारके शक्ति, गलत डगरम धकयाल स्याकथ । देश गलत डगरओर खस्कतीकी सक्कु देशवासी हुकनके जीवन अन्धकार

हुइसेकी । जस्तकी यहाँके सचेतदेशभक्ति न्यायप्रमी जनसमुदायके कमीके कारण १०४ वर्ष सम्म चल्लक राणा शासन, ३० वर्षे पंञ्चायति शासन व प्रजातन्त्रके नाउँम एकतन्त्रिय शासन चलैनाम सफल हूईल । पुरान शाषक हुकनके लौव अनुहार आखिरम इतिहाससे प्रष्ट देखपरकी असिन कुहल तत्व हुकन स्थान देहति रहना कलक युवा वर्गके कमजोरीके कारणसे हो । आज पुरान देश व हमार सामाजके विकास निर्माण जातजातिके सामान अधिकार प्राप्त हुई नै सेकी तब सम्म देश व समाजके विकासफे असम्भव बा ।

नेपाल बहुजाती, बहुभाषिक मुलुक हो । यहाँके जनजाती हुकनके चालचलन के फरक-फरक किसिमके बा तर सक्कु जातीहुकनके लोकसंस्कृति व संस्कार देशके सक्कु व्यक्तिहुकन थाहाँ हुई नै सेक्ल हो । काकरकी पहिल बात त जौन संस्कृति व संस्कार जौन जातीसे ज्वारल बा उह जातीहुकनके संस्कृति बचाईक पर्ना प्रभावकारी पहल नै कर्लक कारणसे हो कलसे और कारण देश भित्तर रलक सक्कु जाती समुदायके भाषा व संस्कृतिके रक्षा कर देनाम राज्यके महत्वपूर्ण भूमिका हो । यदि राज्य जनजाती सम्बन्धि प्रभावकारी निति नै लानी कलसे ऊ जातीहुक्र आपन भाषा संस्कृतिके बारेम कदम चलाई नै सेकही । यि दुनु कारणके बिचसे हम्र सम्बन्धित जातीके युवावर्गहुक्र भाषा व संस्कृति बचाइक लाग आग बढ पर्ना बा । आजकालके हमार गाउँ ठाउँके लौव पिढीं (युवावर्ग) आपन भाषा संस्कृति से बहुत फरक संस्कारके व्यवहार देखैती रलक बात पश्चिमी छाडा संस्कृतिके प्रयोग कर्लक चीजसे प्रष्ट देख जाइत । जस्ता कालके हमार जातीके शुद्ध भाषा आज मिस्रित हो स्याकल बा । हमार जातीके नाचगान धिरसे हैरैती फिल्मी नाच व गीतम युवा युवती हुक्र रमइति रलक देखजाइत । जातिय मान मर्यादा, आदर व सत्कार कर्ना शब्द हेरास्याकल, जातिगत भेषभुषा आकाश पातालके फरक बा । आखिर अस्तेक जातिय पहिचन हेरैति जइना हो कलसे हम्र आपन जात व भाषा कना चिज अस्तके संस्कृति व संस्कार कसिन रह कना बात फे बिर्सादर्वि । तर संस्कृति संस्कार बचैना कहतीकी सक्कु पुरान चिज प्रयोग कर्ती भविष्यम हमार छाइ छावा नाति पनाति हुक्र के जात के परिभाषा व अस्तित्वव बचाउ

स्याकँत । यि सक्कु काम हन अन्त्य सम्म टिकाइक लाग विशेषत युवा वर्गके महत्वपूर्ण भूमिका बा ।

आजकल हमार देशम लौव परिवर्तन हुइल बा । शिषेत : २०५९ माघ १९ गते लात मारके एक किनारम लगावा पैलक राजनितिक दल हुकनके संयुक्त गठबन्धन रलक सात राजनैतिक दल व नेपालम १० वर्ष से पहिल सामान्ति राजतन्त्रात्मक व्यवस्था के अन्त्य कैक देशम नयाँजनवादी ब्यवस्था कायम कर चहना उद्देश्य लेक आग बहरति रलक युद्धरत पार्टि ने.क.पा. (माओवादी) व नागरिक समाजके शक्ति हुक्र मिलके, देशम आज जनआन्दोलनके आँधीबेहरी सृजना कर्ल ऊ आन्दोलन विशेष कैक १२ बुँदा सहमति जोकी सातदल व ने.क.पा (माओवादी) विच हुइलरह ऊ आन्दोलन म सहभागिता देखइलमसे राजतन्त्रके अन्त्य व लोकतान्त्रिक गणतन्त्रके स्थापना कर्ना तर आनदोलनके मुलर्मम व चाहना अनुसारके ब्यवस्था परिर्वतन हुइलक नैपाई सेक्ल । लोकतन्त्रके नाउँम पुरान तन्त्र व मन्त्र के पालन पोषण कर्ती बात । असिन गलत काम हुइना कारण पुरान साँचा म फरक रंगके बस्तु प्रयोग कैक लौव चीज बनइलक हो कहअस केल हो । जस्तके एकथो ईटा पर्ना साँचाम लालमाटि, उज्जरमाटि दारके परवी कलसे ईटाके सक्कु गुण एक्क रही रंग केल त फरक परी जे त ओस्तके नेपालम शासन सत्ता चलुइया ब्यक्ति हुक्र पुरान हुइत कलसे समय-समयम फरक-फरक छाला ओहरके कुर्सीम बैठ्कलाग सक्षम बाती कैक भजन गइलक केल हो । उहकारणसे देशम वास्तबिक परिर्वतन नै हुई स्याकथो । देशम वास्तविवक जनभावना अनुसारके ब्यवस्था कायम कर्ना हो कलसे यहाँके शासन सत्तामं लौव अनुहार लौव विचार के अवश्यकता बा । लौव परिवर्तन करकलाग यहाँके नेतृत्वदायी भूमिका युवा वर्ग हुक्र लिह पर्ना जरुरी बा । आखिर हरेक आन्दोलन सपल पर्ना म युवा हुक्र चाहे जब फे आग रलक बात घटनाक्रमसे प्रमाणित हुइल बा । युवाहुक्रन म नयाँ जोश जाँगर रहथ, लौव लौव विचारके शुरुवात युवा जमातके बिचमसे निकरत । युवा हुक्र ज्या व जसिन कर चहलसे झट्टसे सफल हुइलक देखजाइत । युवा हुकनम तातुल रगत व संवेगात्मक पक्ष ध्यार रलक ओर से हुकनके विगरना व बनैना दुनु पक्ष प्रबल रुपम रहय । उह कारण से

आभुक परिस्थितिम हम्र युवा वर्ग देशके दयनिय अवस्थाहन मध्यनजर कर्ती सही व समुन्नत सक्षम राष्ट्रके रुपम चिंहनाइक लाग प्रगतिशील विचार सहित विकासके लाग व्यवहारिक रुपसे पाइला चलाइकपर्ना बा ।

ईतिहासके कालखण्डम महान अग्रज हुक्र कलबात "युवा हो यि देश तुहनके हो तर हमार फे हो" उह प्रसंगके भाव अनुसार वास्तवम यि देशहन संचालन कर्ना व लौव राष्ट्रके निर्माण कर्ना मुख्य जिम्मा जो युवा पिंढी हुकन के हो । कलसे बृढ बृढा हुकनके भूमिका के आवश्यक बा कलक हो । उह कारणसे हम्र युवा हुक्र किहुसे भेदभावके भावना नै लेके सक्कुजहनसे समान आधरसे संघर्षम भाग लेती आपन कर्तव्यहन जीन भूलाई कना यि अवस्थाके माग हो । यदि हम्र अपन जातीभाषा व संस्कृतिहन बचाइ चहति कलसे सबसे पहिल हमार पुर्खा हुकन सम्भी व मानव हुइति कलसे आपन जीवनकालम बाँच्के केल नाही की कुछ करके देखाइ । काकरकी प्राणी मध्येके सब से चेतलशील प्राणी मनइ हुइति । अन्त्यम थारु भाषा व साहित्य उत्थानके लाग सक्कु गोचाली युवा हुक्र कलम चलाई ।

–भागीराम अगलपठ्वा चौधरी
धधवार गा.विस्. वडा नं. – ८
(ख) बेलभार, बर्दिया

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औ अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना व्यक्त करति ।

श्री जनसेवा माध्यमिक विद्यालय वैदी बर्दिया नेपाल
परिवार

कमैयक जीन्दगी

कसिन हो यी कमैयक जीन्दगी
कयो पुस्ता बितल हमार दुःख साँसत कति
छेग्रहवा बर्दिया गयरवा वन्ती कमैया वन्ली
सुख शान्तिसे हम्र कबो बैठ नै पैली २ १

पस्जना बहैली मेहनत कैक काम कर्ली
दिहुवा खेतवा हम्र जोत्ली
उँखर-खाँखर जग्गाहन मलगर बनैली
तब फेन आपन नाउँम एक धुर जग्गा नै पैली २ २

छाई कम्लहरी जन्नी बुक्रही लगैली
वर्षम हाँथ ग्वारा सराक खेती कर्ली
अन्नले मलिकवक् वखारी भरैली
रात दिन मर² काम कैक फे अप्न भुँख मुली २ ३

दास अस कमैया जीन्दगी बितैली
सद्द मालिकवाके सेवाम लागल रली
शोषणके जालम हम्र फँसल रली
दासताके जन्जीरसे कब्बो उम्क नै सेकली २ ४

दुःख ओ दर्दके वेदनाले भरल बा जीन्दगी हमार
छाइ-छावा आँस गिरैथ जब ऐथा तै तिहार
मानव होक नै पैली मानवताके व्यवहार
उह ओर्से ख्वाजती हम्र मुक्तिक डगर २ ५

२०५७ साल सावनके महिनाम
कमैया मुक्तिक घोषणा हुइल हमार देश नेपालम

मुक्तिक घोषणा सुन्क खुशी लागल मनम
कमैया एकता हुइकलाग बैठ गैली शिविरम २ ६

सुखके कल्पनाम आपन बनाइल बुक्रा छोर्ली
सावनके चुहत झरी विचल्लीम पर्ली
नामजा घर बनल ना त खेती कर्ना जग्गा पैली
नै जुहाइल दाना दरिया हम्र भुँख मुली २ ७

सुखके कल्पना हमार सपना जसिन बन लागल
भावनाके महलहन आँधी बौखा उराय लागल
गरीबके जीन्दगीम कत्रा धेर दुःख मिलल
कसिन हो यी कमेया मुक्ति हमार अवस्था ओस्त रहल २ ८

गास, वास, कपास, शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार
हमन फेत मिल परल जीवनके आधार
मानव हुइती चाहल हमन मानव अधिकार
हमार आवाज नै सुन्ना कसिन हो सरकार २ ९

कमैया मुक्ति हो कि शोषण कर्ना लौव जुक्ति
लर्का हमार बनल बाट साहुनके घर बन्दकी
जीवनम ऐती रथा लौव विपत्तिव
आँस पिक बाँच पर्ना कसिन हो जीन्दगी २ १०

कमैया हम्र वनल बाटी राजनितिक खेलौना
कुई नै सुनदेल हमार हृदयके बिलौना
कत्रा हुइल सभा जुलुश कत्रा बैठली कमैया आयोगम धर्ना
जौन सरकार ऐलसे फे हमार वास्ता नै कर्ना २ ११

राजनितिक खिचा तानी चलल हमार देशम
नेता हुँक घाटी फलाक कर्थ नम्मा भाषण
दिनभर सभा जुलुश संझया ऐबो झोंप्रम
कठ्लीम हमार चाउर नै हो का दर्ना हो प्याटम २ १२

लोक तन्त्र लानक लाग लग्ली हम्र नारा जुलुशम
कत्रा सहली अश्रुग्याँस, कत्रा वर्षल लाठी कपारिम
आशा ओ भरोसा कर्ली लौव अइना दिनम
खै त हमार माग पूरा हुइल लोकतान्त्रिक सरकारम २ १३

–जग्गुप्रसाद चौधरी (भगोरिया) धधवार–९
बर्दिया

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औ अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ-कामना न्यक्त करति ।

डेउढाकला गा.वि.स. परिवार
बर्दिया नेपाल

आन्दोलनह बुझ्ना सवाल

निश्चिय रुपम नेपाली जनता शान्ति चहथ । तर मुलुकह आब शान्ति व सरकारके हाथम बा पहिल चरणके शान्ति बार्ता लगत्त विद्रोही व सरकारी बार्ता टोलीक संयोजक हुक्र दुनु जानअग्रगमनके पक्षम देलक प्रतिबद्धताह स्वागत कर सेक्जाइथ । बिद्रोही हुक्र समाजके संरचनाम आमुल परिवर्तन देखाक प्रस्तुत कैसेक्लबाट । युगौं युगसे समजम विद्यमान उत्पीडनसे सद्धक लाक छुटकारा पाइकलाग जाती, वर्ग लिङ्ग, भाषा धर्म व क्षेत्रह सम्बोधन कैक पुरान सामन्ती समाजके संरचनाह बढलक नेपाली हुकनके बिचके आत्मीयताह आबक से फे धिउर सुदृढ कैक लैजैनाम विद्रोही हुक्र कतिबद्धबाट । किराँत, मधेश, तमाङ, नेवार, मगर, गुरुङ व थारु बाहुल्य हुइलक क्षेत्रके केल नै होक समाजके उत्पीडीत वर्गके जनताहुकन आत्म निर्णयके अधिकार सहित मुलुकके संघात्मक ढाँचाके पुनः संरचना करक लाग बिद्रोही हुक्र आघ बढती बाट । नेपाल व नेपाली जनतनह कसिक समुन्नत बनैना दृष्टिकोण विद्रोही हुकन संग जत्रा बाटिन ओत्रा और पार्टी व सरकार संग नै हुइन विद्रोही पार्टीम जनता काकर संगठित हुइल बाट व उ जनता काकर खोज्तीबाट कना बात नै बुझलसे आँधर मनै हात्ती छामल जपिसन बिद्रोही आन्दोलनके बारेम विभिन्न किसिमके भ्रम सृजना हुइती बा । सामन्ती तत्वहुक्र भ्रम सृजना कैक मुन्टा उठैना अभियानम लागलबाट कलसे कतिपय बुझ्क फे बिद्रोहिन के बातह तोडमोड कर्तिबाट । सात दल बिद्रोही बिच हुइल बाह्र बुँदे समजदारी अनुसार नै ऐतिहासिक जनआन्दोलन हुइलक हो कना बात त लाट मनैन फे थाह बा । जनआन्दोलनके उँचाई निश्चय फे मृत आवस्थाम रलक प्रतिनिधि सभाह जिऐना नै रह, जनताहुक्र आन्दोलनके बलम मुलुकम लोकतान्त्रिक गणतन्त्र स्थापना कर चाहल रलह । सडकम चार सय जनताफे उतार नै सेक्ना बिगतम जनतनके मनमसे विश्वास गुमैलक सात दल मध्येके कुछ प्रमुख दलहुक्र जन चहाना व युगके आवाजके अवमूल्यन करलक हुइत उ तथ्यव सत्यह जत्रा तर्क कर्ल सेफे आब कुई छवाप नै सेकी २००७ सालम जनतनके आन्दोलन कमजोर रह उह कम्जोरीक

फाइदा उठाक प्रजातन्त्रके जग लगाक सामन्तके नाइके हुकन सत्ताम रख्ना खेल हुइल । जनता व युग के चाहना बुझ्क जनतानह पाछ झ्कन धेर उत्पीडन भ्वाग पर्लन । निरङकुस्ताके विरुद्ध जनता २०४६ सालम सडकम उत्रल जनआकाँक्षा उपर काँग्रेस वाममोर्चा हुक्र जुर पानी खन्हयाँक गद्दारी कर पुग्ल । वाकर परिणाम असोज तन्त्र हुइती माघ १९ सम्म पुगल ऐतिहासिक जनआन्दोलन २०६३ एकदम भिन्न प्रकार के रह । विद्रोहिनके उठाइल बिचार व नारा सुन्क मजैरा जत्र आँख लगाक सत्रोसरापक रुइयन भल्ही आज धेर रुपान्तर हुइलबाट तर उ रुपान्तरण हुलक बात ह पर्दा दार कयौं जान आपन विषयमन बिचार ओकलैटीबाट । जनतनके माग व युग प्रति बेवास्ता कैक संसदवादी दल हुक्र जे गलटी करी उ गल्तीह हम्र स्याबासी देती रनाजरुरी नै हो । भलही मृतसैयासे जगलक प्रतिनिधि सभासे ज्या जत्रा सकारात्मक बात हुइल बा वाकर स्वागत व कार्यन्वयन करैना हम्र सबजान खबरदारी कर्ति रह परी । सात दलक गटबन्धन फे प्रतिनिधि सभा नै सब थोक हो । कखीचेपल रैक सत्ताम टाँसल रना कोसिस कर्ति रही कलसे उह नै अग्रगमनके सबसे बरा बाधक बन्ने बा । प्रतिनिधिसभाम आज जत्रा प्रतिनिधित्व बा ओही सेफेमुलुकह अग्र गति देक समुन्नत नेपाल बनाईना चाहना विद्रोही पार्टी, सचेत नागरिक समाज, जाती, वर्ग व क्षेत्रके बासिन्दा हुक्रसत्तासे बाहेर बाट । मुलुकह भ्रष्ट निकास देक दिगो शान्ति देना पक्षके बात कर्ति सात दल हुक्र यिह प्रतिनिधि सभाम नै जिवित बितैना अस कामकारबाही ओर लगती बाट । ग्रामीण बस्ती मसे जरबुट्टा समेत उँखवापाईल व आम जनतनसे अस्वीकृत हुइल पुरान सत्ताके स्थानीय निकायह जगैना खेलम हुँक्रलागल बाट । अस्तक काम कर्ति यी प्रतिक्रान्तिकारी निर्णय प्रतिनिधि सभा करीकलसे याकर परिणाम भयानक निकरीकना निर्विवाद बा । यी बातह संसदवादी सात दल व सरकारके नेतृत्व करुइया हुक्र ब्यालम बुझ पर्ना जरुरीबा । हो प्रतिनिधि सभा आब विषक रुख्वाके हाँगा फैलैना कोसिसम बा । २३७ वर्षसे जनतन ह डाँसक बैठल राजतन्त्रके जर आम्ही फे काट गैल नै हो । इहम सब चिज हुइल हो कैक हल्ला फिंजाक जनतनह मूर्ख बनैना कोसिसम लोकतन्त्रके सच्चा पक्षधर हुक्रलग्ना नै हो । विद्रोही हुक्र आज कमजोर हुइल बाट यिह

मौका पारक हिंकनह खतम पार सेकजाइथकना मनसाय राख्ना होकलसे उ आन्दोलनके उठाइल मुद्दाके भेउफे नैपाइल थहरथ । बिद्राही हुक्र सुरक्षित्वरण खोज्ती बाट । आब हिंकनह यिह मौकाम दुई चारथो लोभैना बात बत्वाक हक सद्दभर सत्ता भुलैती रही कैक कुई स्वाँचत कलसे ओहीसे भारी मूखर्ता और कुछुफे नै हो । विद्रोही हुक्र आपन उठाइल समाज रुपान्तरणके मुद्दाह सम्बोधन करक परी कैक चहथ । बिद्रोही आन्दोलन समस्या नै हो, समस्या त पुरान सत्ताहो । सांच्चिकै अबतरण चाहनाहो कलसेत पुरान सत्ता सक्कु दल परथ नेपाली जनता यिह चहल बाट । बिद्रोही हुक्र अत्रा ब्याला जनता हुँकनके जिमम्मेवारी बोधके साथ बार्ताम गैल बाट ।

–श्री सुखीराम चौधरी
वेलभार, बर्दिया

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना व्यक्त करति ।

श्री किसान नि. मा. विक. फच्चकहवा परिवार

श्री सगुनलाल चौधरीक छोटकरी चिनारी

दाङ्ग जिल्ला सौडियार गा.वि.स. वडा नं. ९ बेलहरीम वि.सं. २००९ सालमाघ ९ गते बाबा आशाराम थारु व दाई गुइति थारुके छोटकी छावक रुपम जनम पैलक असल समाज सुधार क, शिक्षप्रेमि प्रगतिशिल बुद्धिजिवीक नाउ हो । श्री सगुन लाल चौधरी । वहाँ पिछरल थारु किसान परियार म जन्म लेलक रलसेभे वहाम चिन्तन शक्ती प्रगतिशिल वातिन । विद्यार्थी जीवन कालसे समाजम जर गर्ल रहल अन्धविश्वास कुरिति, जातिय भेदभाव, छुवाछुट, शोषण जसिन नै मजा पक्षह हटाइक लाग विशेष भुमिका खेल्ना प्रगतिशिल चिन्तन हुइलक श्री सगुनलाल चौधरी थारु भाषा व साहित्यक क्षेत्रम त झन महत्वपूर्ण योगदान बातिन । वि.सं २०२८ साल से प्रकाशित हुइना थारु भाषा व साहित्यक फाँटम मजाकाम कर्ल बाफत वि.सं. २०५० फागुन ६ गते काठमाण्डौंके "यूद्ध प्रसाद मिश्र" पुरस्कार से सम्मानित हुइल हुइत । हरेक पक्षके सकारात्मक परिवर्तन के लाग शिक्षा अपरिहार्य विषय हुइलक बातह मनन् कर्ति शिक्षा क्षेत्रम प्रवेश कैक निम्न वर्गिय समुदायक रहल पछौटेपन हटैना अभियानक महत्वपूर्ण भूमिका खेल्लक ओर्से वि.सं २०५३ साल जिल्ला शिक्षा कार्यालय बर्दिया से शिक्षा दिवश के अबसर पारक पुरस्कार व प्रमाण-पत्र से सम्मानित हुइल ओ थारु समुदायक झन घिउर लोक प्रिय बन्ल । शिक्षक हुक्नके हक हितके लाग लरुइया नेपाल राष्ट्रिय शिक्षक संगठनके फे सस्थापक सदस्यके रुपम काम कर्ति वहाँ जिल्ला कार्य समितिक विभिन्न जिम्मेवारी पूर्ण पदम जिम्मेवारी सम्हल्तीअइल वात ।

रेडक्रस सिद्धान्त अनुसार मावनता निष्पक्षता, तटस्थटता, ऐच्छिक सेवा एकता, विश्व व्यपकता जासिन मजा वातह आत्म सात कर्ति वहाँ नेपाल रेडक्रस सोसाइटी के आजिवन सदस्य फे हुइत ।

वि.सं २०१६ सालम सौडियार स्कुल से प्रा.वि. शिक्षा प्रारम्भ कर्ति पदमोदय पब्लिक हाई स्कुल घोराही दाङ्ग से वि.सं. २०२५ सालम प्रवेशिका परिक्षा पास कर्लक श्री सगुन लाल चौधरी सन् १९७८ म श्री हरिस चन्द्र इन्टर

तर समय क्रमशः गति लेतिगिल । मनैनके आवश्यकताफे बहर्ती गिल व ऊ आवश्यकता परिपुर्ति लाग खेतीपातीके सुरुपात, पशुपालन तथा घर क उद्योगके विकास हुइ लागल । जौन परिवारम नयाँ क्रान्ति नानदेहल । जिविकाके साधनके उत्पादन करती अइलग । पुरुष वगै पाछ जाक हुकन मालिक बनल । जस्त : सुरुम पुरुष पशुके हेरचाह करता कलसे पाछजाक घरके पालुवा बनैन । कामफे हुक्र हे करल । फल स्वरुप पशु हुकन सम्पत्ति बनैल पशु विनियम म से प्राप्त हुइना सामान लत्ता , कपडा, भाँडाकुँडा, व पाछ जाक दास । फे हुकनकसम्पत्ति बनल ।

असिक निजि सम्पत्ति प्रादुर्भाव संगे महिलनके आर्थिक अधिकार छिन गिल । उत्पादनके क्षेत्रम औसिक स्वामित्व निर्माण हुइल फे ऊ बेलाम श्रम विभाजनम कौनो परिवर्तन नै हुइल रह । महिला घरके कामकाजम व्यस्त रलह तर घर बाहेरके श्रम सम्बन्ध चाहा बदल गिल रह । जौन श्रमके कारण काल महिलन घरके सर्वेसर्वा बनैल रल । आज उह श्रमिके कारणसे घरम पुरुषके आधिपत्य दिन सुनिश्चित कर देलक कारण जिविका पार्जनके ल़ाग पुरुष बाह्य श्रमके तुलनाम महिलनके घरेलु श्रमके काँनो कारण महिला हुकन सामाजिक अर्थात बाह्य श्रम से कारण सामाजिक अधिकार से बन्चित करैल ।

यि आर्थिक व सामाजिक कारणसे पारिवारिक संरचना फेरबदल हुइल । प्रचलित समुह विवाह व सामुहिक नेतृत्वमसे आघ बहरक समय बित्तीगिल पुरुष चाही समुहके धेर महिलनम एक जन प्रमुख छानकन उहिन घरचलैना मुख्य सहयोगीके रुपम घर लैगैल गैल । उहिन आविन व्यवहाररिक बनाइकलाग युग्म विवाह प्रचलन सुरु करल । युग्म विवाहम थरुवा-जन्नीकै सम्बन्ध धेर खुल्ने रह । एकजना-और जहन छारदेहले सेफे कौनो बन्देज नै रहतर जब सम्पत्तिके मालिक बन्ना प्रकृयाके थालनी हुइल । तबसे आपन निजि सम्पत्ति आपन सन्तानम हस्तान्तरण करपनो स्वार्थ पुर्ण आवश्यकताले एक निष्ठ विवाहके प्रचलनके सुरु हुइल काकर कलसे एक निष्ठ विवाहम से पितृत्व निर्धारण (बाबक चिन्ता) करलक सन्तान जन्म स्याकी ।

सुरुम पुरुषके उत्तराधिकारी कायम कर्ना उद्देश्यमसे करलक उकनिष्ठ विवाहके प्रचलन कालान्तर समाजके विवाह सम्बन्धि सर्वमानय मापदण्ड

बन्ल सामाजिक व कानूनके मान्यताके साथ आजसम्म फे कायमै बा तर यहाँ ध्यान देनाबाट का बा कलसे यि एकनिष्ठताके मापदण्ड महिलाम केल लागु हुइल बा पुरुषन चाहि कौनो बन्देज नै हो । यकर ज्वलन्त उदाहरण हम्रे बहुपत्नी प्रथा, बहुविवाह, वश्यागमन किहिन लिह सेक्जाइत ।

ओशिक सम्पत्तिके उदय हुइनासे पहिल अधिकार सम्पन्न व शक्तिशाली रलक महिला वर्ग निजि सम्पत्तिके उदयसंग शक्तिहित व अधिकार विहिन बन पुगल । परिवार उत्पादनके साधन व सामाजिक उत्पादन सम्बन्धम महिलनके भूमिका नगण्य हुइल तबसे समाजम महिलनके स्थिति सामान्य वस्तु सरह बन पुगल । उदमसे सुरु हुइल महिलनके उपर कर्ना विविध खालके उत्पीडनके उटुट श्रृखला ।

२) महिला उत्पीडनके रुप :

ऐतिहासिक कालमसे नै महिला वर्ग विभिन्न उत्पीडनके शिकार बन्ती अइतीबाट । चाहे ऊ सामाजिक होय, चाहे ऊ लैगिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक या और कौनो सक्कु क्षेत्रके उत्पीडनके तित अनुभूती यि वर्ग संगे पर्याप्त मात्रम वा उत्पीडनके रुप असंख्य मात्र हुइलसेफे कौनो फे स्रोतसंगे सम्बन्धित बा । उहमार मुलत : महिला उत्पीडन दुइ रुपम हेर सेकजाइथा उहाँ : वर्गीय व लिंगीय उत्पीडन ।

क) वर्गीय उत्पीडन :

सामाजिक वर्गभेदके कारणसे अर्थात शोषक बर्ग शोषित वर्गके उपर कर्ना हरेक उत्पीडनके मार ऊ वर्गम पर्ना आम महिला हुक्र प्रत्यक्ष परती बाट जस्त : गरिबी, अशिक्षा, वेरोजगार, असुरक्षा, न्युन ज्याला, अत्याधिक श्रम आदि । यि समस्या उत्पीडन वर्गम पर्ना महिलानकेल नै होक ऊ वर्गके पुरुषफे परथबाट उहमार यि समस्यामसे उत्पन्न हुइना उत्पीडन किहिन वर्गीय उत्पीडन कैजाइथा ।

ख) लिङ्गीय उत्पीडन :

वर्गीय उत्पीडन बाहेक लिङ्गीय रुपम महिला हुइलक कारणसे अर्थात प्राकृतिक शारिरीक बनौटके आधारम महिलान उपर कर्ना हरेक प्कारके उत्पीडन लिङ्गीय उत्पीडन लिङ्गीय उत्पीडन हो । जौन उत्पीडन

उह वर्गके पुरुष नै भोग परत। जस्तः महिलन घरक हिंसा, बच्चा, बच्चीके बोझ, बलात्कार, अपहरण, महिला बेच विखन सामाजिक कुसंस्कार, धार्मिक कुरिती, अन्धपरम्परा आदि। यि उत्पीडन प्राय जैसिन पुरुषद्वारा आपन सामाजिक शान सौकत व बहादुरी प्रदर्शन कैक व महिला हुकन विरिह सावित कर महिलन उपर थोपारल देख जाइथ।

३) महिला उत्पीडनके अन्त्य :

उपरके चर्चा व विश्लेषणमसे हम्रका थाह पइथी कलसे महिला उत्पीडनके उत्पत्ति निजि सम्पत्तिके उदयसंग हुइलक हो। जौन आभिन कायम बा। तर वकर अन्त्य हुइसेकी कि नै हुइसेकी। यि प्रश्न स्वभाविक रुपम उठट। आब इतिहासके कौनोफे काल खण्डमा तत्कालिन परिस्थितिके उपजके रुपम महिला उत्पीडनके जन्म हुइल कलसे इतिहासके कौनो फे कालखण्डम यि परिस्थितीके अन्त्य हुइना अनिवार्य बा। यित वैज्ञानिक आधार सेहि सम्भव बा। तर उकर सैदान्तिक-वैचारिक आधारम का-का बाट एकर बारे चर्चा करी।

महिला उत्पीडनके नारीवादी आन्दोलन खास कैक १० औं शताब्दमि भारी आन्दोलन हुइल। तर निष्कर्ष चाहीका निकरल कलसे महिला उतपीडनके असली स्रोत कलक पुरुष वर्ग हो। पुरुषद्वारा नै महिलनके विद्यमान उत्पीडन भोग परतीन। उहमार पुरुषके विरुद्ध संघर्ष करक अर्थात पुरुष सरह अधिकार उपभोग करके तब महिला उत्पीडनमसे मुक्ति हूइसेकी। यि धारणा ऊ बेला धेर चर्चा पाइला व यि धारणासे प्रभावित होक आम महिला हुक्र आन्दोलनम उत्रला व उह धारणाके साथ महिला हुक्र विभिन्न रुपम आन्दोलन फे करतीबाट। तर उक्त धारणा कारलग आन्दोलनमसे विद्यमान राज्य व्यवस्था समयानुकुल हुइना छोट मोट महिला सम्बन्धी सुधार काम बाहेक आधारभूत रुपम महिला उत्पीडन किहिन नै छुलरह। बरु एकर सम्बन्धी और तित यथार्थ काहो कलसे नारीवादी कर नै सेक्ना। निरास होक्र आन्दोलनमसे घुमक यथास्थितीके पक्षपोषण करती रहना। हम्र देखती यमसेका प्रमाणित हुइत कलसे पुँजीवादी राज्य सत्ता भित्रर पुरुष विरुद्ध कर्ना महिला आन्दोलनले महिलनके वास्तविक मुक्तिनै हुइसेकी।

महिला उत्पीडन सम्बन्धी चर्चा चल्ति रलक बेलाम समाजम और एक थो अैसिन धारणा फे जवजस्ती रुपम रह : ऊ हो महिला उत्पीडनके मुक्ति नै हुइसेकी, यि सत्य हो। भगवान नै महिलन सक्कु वेहोर्ना सृष्टिकरर्लक हो। उहमार महिला मुक्ति के बात कर्ना बेकार हो। आदि खासगरी यी धारणा कैंना धार्मिक कट्टरपन्थी चर्चके चाकरी होकन तथा शोषक वर्गके हुइट। तर यि धारणा आम उत्पीडन महिला हुकन खासै प्रभाव नै पारला।

यि धारणा समाजम ब्याप्त हुइलक १० औं शताब्दीके मध्य लङ्ग महान दार्शनिक कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्ससे लिखित प्रसिद्ध कृर्ति "परिवार, निजी उत्पीडन" सम्बन्धी सक्कु धारणासे वैज्ञानिक ढंगसे विश्लेषण करदेल। उक्त विचारले महिला उत्पीडनके एतिहासिक ब्याख्या कर्ती एकर अन्त्य व अन्त्यक लाग अपनैना ड्वार खोल दिहल।

मानव इतिहासके वैज्ञानिक ढंगले विश्लेषण कर्ती मार्क्स महिला उत्पीडन व एकर अन्त्य सम्बन्धी का निष्कर्ष निकरल कलसे महिला उत्पीडनके वास्तविक स्रोत पुरुष सामुदाय नै होक्र निजीसम्पत्ति व एकर आधरारित पितृ सत्तात्मक राज्यसत्ता हो। उक्त राज्यसत्ता अर्न्तगत चल्ना हरेक संयन्त्रले महिला उत्पीडन किहिन झन बलगर बनैती लैजाइता। उहमार निजि सम्पत्ति। एकर संरक्षण कर्ना पूँजीवादी राज्यसत्ता व उकर अन्तर्गत सामाजिक उत्पीडनके अन्त्य ले हुइसेकी। उक्त अवधारणाके बाटका पुष्टीकरत कलसे समाजम निजी सम्पूर्ण असमानता फे हट्नेबा। यि बाट स्वतः महिला हुकनके हैकम फे लागु हुइ। जौनबात वर्ग विहिन समाजके लिय सम्भव हुइना। वर्ग उन्मुलन पाछके वर्ग विहिन समाजम महिलनके उत्पीडनमसे उत्पन्न हुइना समस्या वर्गके अन्तयसंग बिलैती जाइ कलसे लिगीय उत्पीडनमसे भोगती रलक समस्या जौन पुरुषनके उत्पीडनमसे हुइती बा ऊ फे अन्त्य होजाइ। काकरसे उबेला पुरुष पूँजीके आडम आपन अदम अर्थात पुरुषत्व प्रदर्शन कर्ना ठाउ नै पाइव महिला हुकन उपभोग वसतुके रुपमफे नै बुझी तत्कालिन उत्पादन सम्बन्धके कारण महिला व पुरुष दुनु उन्नत व वैज्ञानिक चेतनाद्वारा लैस हुइने बाट। जबसम्म विवाहके बात पुरुषम लागु हुइना उच्चस्तरके एकनिष्ठ विवाहम कर्ना बा जुन विवाह सच्चा प्रेमके आधारम कल हुइ सेकी।

मार्क्सके उल्लेखित विचारले स्पष्ट रुपमका किटान करदेहल बा कलसे महिला उत्पीडनके सवाल सिंगो वर्गीय उत्पीडनसंग जोड्ल बा । उहवमार यिहिन वर्गीय उत्पीडनमसे अल्ग देर नै मिलता उक्रल विचारले उत्पीडनमसे स्रोत व एक र अन्तेयके बारेम ब्याख्या करक उहिन खत्तम कर्नासाधन व विधिके बारेम फे सशक्त आग नानल हो : वर्ग सर्घर्ष से कर सेक्जाई सर्वहारा वर्गके उह सत्ताके समाजवाद । हो यि सव वर्गके विलय होख साम्यवादके स्थापना हुई ।

8) निष्कर्ष :

महिला उत्पीडनके उदभव व अन्त्य सम्वन्धि उपरके चर्चा व विश्लेषणमसेका निष्कर्षम पुग सेकजाइथ कलसे महिला उत्पीडन कौनो दैवी खेल वा प्राकृतिक देन होक वर्ग समाजमसंग हुइलक हो । सामाजिक शोषणके एक्थो विशिष्ट रुप हो । उहमार यकर अन्त्य फे वर्ग समाजके उन्मुलनसंगे हुइना अनिवार्य बा । तर यि बाध हात काधकन सम्भव नै हो । यकरलाग उत्पीडनके अन्तय नै हुइत सम्म संघर्ष कर्तिरह परि । तब संघर्ष महिला वर्ग के अकेली पुरुष वर्गके विरुद्ध नै हुइ । सिंगो पूँजीपति वर्गके राज्य सत्ता पल्टाइ वर्गीय आन्दोलन संग जोरके करेक परी । यकर बारेम उत्पीडित महिलनम कौनो कहोर से फे भ्रम हुइ नै परी । यकर प्रसगम अर्न्तराष्ट्रिय कम्युनिष्ट महिला नेतृ हुकनके कहाइ किहिन स्मरण कर्ना उपयुक्त रही । उहमार कलबाट अलेकजेण्डर कोलोन्ताई-"पूँजीपतिथ महिलास प्राप्त कर्ना पत्येक वोसिन सफलता व लौव अधिकारले हुकनके हातम वोइनेनके बहिनेन दबैइना एकथो औजार केल देइदेहलेबा व उहमार दुइ विरोधी सामाजिक शिविरम रहलक महिलाहुकन विभाजन कर्ना खोलती आविन गहिर केलि पर्ने बा । "

हमार गोचाली भीम जी के छोटकरी चिनारी

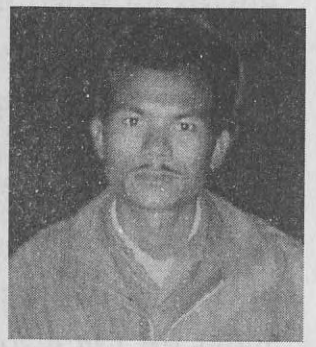

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल गोचाली परिवार-२०२८ केन्द्रिय सदस्य तथा शिक्षा प्रेमी, समाजसेवी, प्रगतिशील, बुद्धिजीवी, मानवताबादी विचारले भरिपूर्ण हुइलक हमार गोचाली हुइत भीम बहादुर चौधरी उहाँक बाबा लालबहादुर चौधरी तथा दाइ गुल्पी चौधरीक बडका छावाके रुपम वि.स. २०२० साल कुवाँर महिनाके २४ गते दाङ्ग जिल्लाके धनौली गा.वि.स. अर्न्तगत चरकमतिया गाउँम जर्मलक हुइत ।

एक साधारण परिवारम जन्मलक हमार २०२७ सालम दाङ्ग जिल्लासे् बुहान (बर्दिया) के धधवार गा.वि.स. वाड नं. ३ कतर्निया गाउँम आक बैठ्ल । दाङ्गम जिम्दारनके शोषण, अन्याय अत्याचार धेर हुइलक कारणसे (छारा कर्लक) बात उहाँके बाबा कथ । छोटसे शोषित पिडित जीवन विताइ पर्लक ओर्से हुँकहिन समाजम हुइना शोषण, अन्याय अत्याचार, दमन जसिन नैमजा चलन मन नै परन । जाती, धर्म, लिङ्ग के बिचम हूइना भेदभाव छुवाछुत जसिन प्रथाके उहाँ विरोधी रलह । प्रा.वि.तह सम्मके शिक्षा श्री जनसेवा मा.वि. (उ समय के प्रा.वि.) बैदीम हासिल कैक हाईस्कुल सम्मके शिक्षाके लाग, नेपालगंजम गैल भीम जी । आपन घरक आर्थिक अवस्था कमजोर हुइलक कारण आनक घर काम कर्ना ओ पढना लिख्ना कर्ल । नेपालगंज जाके अध्ययन कर्ना क्रमम हुकहिन सरकारी अधिवक्ताके कार्यालय नेपालगंजम अस्थायी पियन जागीर मिल्लन । आब आपन पढाइके खर्च पियन जागीरसे प्राप्त हुइना रकमसे चलैती राम जानकी कालेज रुपैडिहा बहराइच (भारत) म आपन अध्ययन क्रमहन आग बढैती गैल ओ सन् १९८२ म हाईस्कुल परीक्षा पास कर्ल ।

वास्तवम उहाँ एक मेहनती लगनशील इमान्दार आज्ञापालक, अनुशासित हुइलक कारणसे सक्कु जन हुकहिन मन पराइन । समय चिन्हा कत्रा बेर

लग्थाजे कुछ समयके बाद जौन कार्यालयम उहाँ पियन रलह उह कार्यालयम एक खरीदार के दरवन्दी खाली हुइलक ओर्से हुकहिन मिति २०३९ साल माघ २० गते खरीदार पदम अस्थायी नियुक्ती मिल्लीन । पाछ जागीरके क्रमम बर्दिया जिल्लाम स्थायी शिक्षक सेवा आयोग खुल्ल रह । उहाँहन फे स्थायी शिक्षक सेवा आयोग पदम रहके भविस्यके कर्णधार बालबालिका हुकन शिक्षा देनामन लग्लक ओर्से आयेगम दरखास्त लगैल । शिक्षक छनोट समिति बर्दियासे लिहल लिखित तथा अन्तरवार्ता म पास हुइलक कारणसे अस्थायी खरिदार पदसे राजीनामा देक वि.सं.२०४० सालम सवसे पहिला जनता प्रा.वि. हाल मा.वि.रम्भापुरम प्रा.वि. तहके स्थायी शिक्षक पदम नियुक्ती लेल । वि.सं.२०४१ साल वैशाख १० गते सम उह विद्यालयम अध्यापन कर्ल । पाछ घर पायक मिलैना क्रमम वि.सं २०४१ साल बैशाख ११ गते श्री धर्म भक्त प्रा.वि. कतर्निया (हाल मा.वि.) धधवारम उहाँ सरुवा मिलैल । शिक्षकम हुइपर्ना बैयक्तिक, शैक्षिक तथा सामाजिक गुण हुइलक एक कुशल शिक्षकके रुपम मूल्याङ्कन कैक विद्यालय संचालक समिति भीम जी हन विद्यालयके प्रधानाध्यापकके जिम्मेवारी दिहल ओ उहाँ विद्यालयके प्रगतिकलाग आपन कार्यकालम मजा काम कर्ति गैल । शिक्षण पेशाके दौर ानम सन् १९८५ म तारा महिला इन्टर कालेज बहराइचसे प्राइवेट परीक्षार्थीके रुपम इन्टर (आई.ए.) पास कर्लक ओर्से आन्तरिक बढुवाम अवसर पाक वि.सं. २०४६ साल फाल्गुन महिनाके ३ गते उहाँ उच्च प्रा.वि. म आन्तरिक बढुवा हुइल । धर्म भक्त प्रा.वि. कतर्नियाम शिक्षक दर वन्दी पूरा नै हुइलक ओ दरबन्दी संख्या पूरा नै रहल विद्यालयम उच्च प्रा.वि. के दरबन्दी रह नै मिल्ना नियम हुइलक कारणले भीम जी क सरुवा वि.सं. २०४६ साल फाल्गुन ५ गते ने.रा.प्रा.वि. माछागढम हुइलिन । पाछ २०४७ साल असार महिनाके १२ गते हुकाहार सरुवा श्री जनसेवा मा.वि. बैदीम हुइल

शिक्षा नियमावली परिवर्तनके सँग शिक्षकनके श्रेणी विभाजन कर्ना क्रमम उच्च प्रा.वि. ह हटाके प्रा.वि. द्वितीय श्रेणी कायम कर्ना हुइलक ओर्से वि.स. २०५३ साल कुवाँर २१ गते से भीम जी प्रा.वि. द्वितीय श्रेणीम पदस्थापन हुइल । शिक्षण पेशाके अनुभव कर्ति अनेक वसन्त पार कर्ति गैल ।

ईह क्रमम भीम जी एक सक्रिय कार्यकर्ताके रुपम नेपाल राष्ट्रिय शिक्षक संगठन बर्दियाम प्रस्तुत हुइल रलह । उह ओर्से उहाँ शिक्षक संगठनके एक असल व्यक्तित्वके रुपम चिन्ह जैथ । शिक्षाके अजुरार दिया देखाक भविस्यके कर्णधार बालबालिका हुकनके भविस्य निर्माणम लागल हमार गोचाली समाजम रहल अन्धविश्वास, कुरीति, शोषण, जातीय, लिङ्गिय भेदभाव, छुवाछुत जसिन खराब प्रथाहन हटाक लौव प्रगतिशील समाज बनैना पक्षम महत्वपूर्ण भूमिका खेल्ती थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल गोचाली परिवार २०२८ के संगठन विस्तारम विशेष योगदान देल रलह । सत्यकेमार्गम लागि कना उहाँके शब्द सृजनासे थारु समाजहन असल ओ खराबके विचम फरक पत्ता लगाक सही डगर नेङगनाम अगुवाई करल देख जाइथ । थारु भाषा तथा साहित्य प्रेमी भीम जी यि समाजके आत्माभित्तर प्रिय बन्क गोचालीक केन्द्रिय सदस्य सम्म पुग्क समाजहन मजा गुण लगैल बाट ।

उहाँ शिक्षा जसिन पवित्र पेशाम जीव न बितैती अनेक उभर खाभर डगर पार कर्ति आग बढ्ती समाजम चेतना फैलैना काममम निरन्तर क्रियाशील रलह । युवक हुइलक ओर्से उहाँम युवा जोश ओ जाँगुरह उहाँके हाँसी मजाक कर्ना बानी रलक ओर्से संघरियन हँसैना काम म सिपार रलह । असिन हमार मैगर, खेलमस्ती कर्ती नेङ्गना संघरिया भीम जी वि.सं.२०५९ साल बैशाख महिनाम श्रोत केन्द्र ककौरा बर्दियाम मोडुलर (कक्षा शिषण) तालिम लेती रलह । उह महिनाके ३ गतेक दिन तालिम म भाग लेक संझियक जुन आपन घर ऐल ओ बेरी (संझिएक खाना) खाक घरक सक्कु मनै आपन विस्तारम (पठरीम) जाके निद्रा देविक कोखम आराम लेना समय हुइती ब्याला उहाँ फे आपन विस्तारम जाक रेडियो नेपाल क्षेत्रीय प्रसारण केन्द्र सुर्खेतसे थारु भाषाम प्रसारण हुना ख्याल कार्यक्रम सुल्ती रलह । अकसमात हुकाहार घर चारी ओर्से शाही सुरक्षा फोज हुक्र घेरा देक घर भित्तर प्रवेश कर्ल ओ हुकहिन अनेक प्रश्नकर्ति विस्तारमसे उठाके कुछ बात पुछक लाग लैजाइती कहके बण्डीकेल लगाइल अवस्थाम लैगैलक बात हुकाहार पारिवारिक सुत्रसे बुझ जाइथ ।

एक साधारण स्वाझ थारु समाजके परिवारम एक्थो दिया जसिन

अजरार दिह भिर्लक युवाहन असिक रातके सुत्ना ब्याल पठरिमसे उठाके लैजाय वेर घरक जहान परिवारम रात दिन सोच झंखन चिन्ता बढती गैलिन । तब फेन सोधपुछके लाग लैजाइती कना शब्द सुन्लक ओर्से कुछ दिनके वाद हमार मनै घर घुम्के ऐथ कि ? कना विश्वासम आस लग्ल र लह । अस्तक एक दिन दुई दिन कति धेरे समय वित लागल तर भीम जी घर घुमके ऐना कोनो संकेत नै मिल्लक ओर्से घरक मनै (जहान) भीमजी के खोजीम इहँर उहँर सोध पुछ कर भिर्ल । सोधपुछके क्रमम गाउँक जन्ना बुझ्ना अगुवा जसिन मनैनसे सहयोग सरसल्लाह मग्ती ठाकूरद्वारा, चिसापाती जसिन शाही सुरक्षा क्याम्प पुग्ल । तर भीम पत्ता नै लग्ल । अस्तहँक खोजीके क्रमम राजनैतिक कार्यकर्ता, वकिल, मानव अधिकार वादी संस्था, रेडक्रसके अन्तराष्ट्रिय संस्था (ICRC) मार्फत फे खोज्ना प्रयास कर्ल तर भीमके अवस्था अज्ञात के अज्ञात रहल । थारु भाषा तथा साहित्यके उत्थान कर्ति थारु जाती उप्पर हुइना अनेक किसिमके शोषण, दमन, अन्याय अत्याचारके विरोधम आवाज उठैती शोषित, पिडित जनता हुकन आपन हक अधिकार लिहक लाग संगठित बनपरथ कना बिचार लेक नेङ्गती रलह । भीम जी के वास्तविक स्थिति आजके स्थायी शान्तिके वार्ता प्रक्रियाम आज लोकतान्त्रिक सरकार स्थापना हवाए बेर फे सार्वजनिक नै हुइना दुःखके बात हो । उह ओर्से राज्य पक्षसे हुइना असिन किसिमके अमानवीय, घृणित, निन्दनिय ओ अप्रजातान्त्रिक क्रिया कलाप बन्द कर्ति भीम जी के वास्तविक स्थिति सार्वजनिक कैक क्षतिपूर्ति दिह परथ कना गोचाली परिवार अनुरोध करता ।

–चिनारी कर्ता : जग्गुप्रसाद चौधरी
बर्दिया

'किसानके जीवन'

किसान हमार पुर्खौलि पेशा हो तर केन
किसान मन जो जीवन वितैती बाटी आज,
कामसे फुर्सद कब्बुफेन नई मिलथ तर फेन
काम त अईती रहत खचा खच ।

जग्गा कलक घरबास केल बाट तर
ज्वाट क्वार परथ तिन चार विगाहा,
अतरा मेहनत करती करती काकर
पाईपरथ हमन् आधा हिसा ।

जव बदरिमसे पानी धर्तिम आई लागी
हम्र किसान निकर जैवि ज्वात खेत्वम,
काम कर्ति रमैति तर केन डत्करावनके
पत्ता नहि पैवि घाम लाग जाईथ मत्थ्वम ।
तरसे रहि हिला व पानी
उप्परसे रही चहकार घाम,
हात ग्वारा सर्लसेकेन यिह हो
हमार किसानके सद्दक काम ।

अत्रा मेहनत कर्लक हमार
अमृत जसिन पखरक दाना,
वर्ष भरिक ऋण तिर परथ
घरम क्वार नै हो एक जुन खैना दाना २

–जीत राम (जितु) चौधरी
धधवार–९ मेरैया, बर्दिया

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

श्री सिन्हा प्राथमिक विद्यालय बेलभार
परिवार

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

श्री वाल बिद्या प्रा.वि. सिमरहवा
परिवार

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

श्री प्राथिक प्रा. वि. जब्दी
परिवार

ढाईहि माघक-शुभकामना
मोर डाई सेवा ढोग

प्लाइउडके बेन्हवाले बेह्रल छुटमिुटी कोन्टीम देशके राज्धानी काठमाण्डोंमे कुरभुराइल बटु मोर डाई । यहा बहुट जार बा, छोटमे जार भगाइथकलक तोहार गतिया परैलक मै अभिन नै बिसरैले हु । अहपने भान्सा करि ते ठेटठी उस्का-उस्का चुल्हीम लकेरलक, अपने उमेर संगक गाँउक लर कन सँगे कन्डा (गुईठा) बिने गइलक मही आभ्रु अस लागथ ।

मघहा आलु कोरके पस्कक भौगरिम भठारके तल्ले आलु खैलक फोफता साइत अयिभन हुई । जब जब माघ आइथ, मै गाउँक संघरियनसे बरका लदिया (राप्ती) मे बगाले बगाल भिन्सहरी लहाई गैलक समझके लग्लगैथुं । उ लग्लग्गीक् कत्रा मैयां प्रेम रहे, थरथरैठी कोन्टीम् धैल चाउर, नोन, दाल छुओ, डाई बाबक आर्शिवाद लेउ । ओत्रा किल नाही गाउँभरिक मनैन् सेवा लागेजाऊ । लमक्वा ढिकी खाऊ । माघक गुरी गुरी जाँर ओ सुरीक शिकार ते का वयान करे, मोट्टैल सुरीक शिकार आगीम् झरझर भुज्लक ओ चट्नी मिलाके पक्वा खैलक मोर गाँउ देउखर छुट्की घुमना मै कैसिन बिसराई सेकम मोर डाई ।

ओईसिन टे छोटेमे सुरीक शिकार आईवेर अंट्कलक बाद अपने भुजल पक्वा फेन छुटि छुटि छिम्मर बना दि । जिउ रिज्वाईल ते मै सुरीक शिकार खाईक फेन छोड देलु । पोछे साहितय जाने जुकुर हुइलु टे उपनाउँ सर्वहारी लिखा लेलु । आउर चिजिक शिकार टे सर्वहारी होके छोरे फेन नै सेक गैल ।

वुदु बाबक सँगे अक्के खोरियम् जाँड दारु पिलक महि सपनाईअस् लागठ । लेकिन सपना विपना वन गैल । मै बरी पहुनी खैनाहा हो गैलु । बरी जाँड दारु पिनजाहा हो गैलु लकिन अपने मुह फोरके कबो नै कली छावा ऐसिक अन्धाधुन्ध का करे पिथो ? हो, बाबा कभु काल्ह जरुर कहे आपन इज्जत बेज्जत हेरहो । जिउक ख्याल करहो, सक्करहिसे जिन पिहो मायलु छावा । लकिन खै यी सरभरहा मन, दशिया आए या देवारी । माघ टे झन सक्करहीसे मच्चहीक लक आइना । चाकर टाँग करैही पर्ना । भुरी करैयक पेंदी ओंधैही पर्ना ।

मोर प्यारी डाई, का अपनेन् यी बाट सुनके फरहनने खुशी नै लागि ? कि मै जाँड दारु पिनजा जात्रीसे ढिला डेले बतु । आइसिन टे अपनेन्के फेन

बुढिया-बुढुवा जाड-दारु, शरशिकार माछ माच्छी छोर्के मथूरा हरिद्धार जाके जय जुरुदेव बन रख्ली । छावा फेन हमारे लाईनमे आए कना अपनेन्के सोचाई रहे । मै जय गुरुदेव टे नै बनम डाई, लकिन असिन काम नै करम कना अपनेन्के सोचाई रहे । मै जय गूरुदेव टे नै बनम डाई, लकिन असिन काम नै करम जिहीसे अपनेन्के नाउँ माटीमे मिले । 'सर्वहारी' मनै, सक्कु चीज एक्फाले छारे फेन टे नै बन्थो ।

मोर तीनथो छाईछाई वटां, अपने नटिवा देखक चहठी । का छाई-छावा वरावर नै हुइत मोर डाई ? हम्रे तीन भाई, अक्केठो बहिन्या ? अपने टे सक्हुन बरोबर मानी ? फेन नतिवर अश्रा काकरे लागटी ? अपनेक छाई और घर चल्गैल, पल्ना टे छावन हुइट । अपनेक पटुहिया फेन ओस्टे सोचठ, तीन छाईन बिदा कैकै महम्रे बुढिया-बुढवा कोन्वम् कुरभुराइल रहब । नाही एकथो छावा टे चाहै चाही । आप मै ससुइया पटुहियन कैसिन संभ्हाऊ ? अपनेक् बर्का छावा अण्डा बच्चा लेके अल्गे हो रख्ला । माघ महिना ना हो, घर फुट्ना महिना । और छावन् फेन अल्गाई सेकठां । अल्गाके, घर फुट्के व जन्नी लेके, अंशा लेके और ओर चल्जैना छावा मनैन्के अपने अश्राका करे कर्ठी, बटाई टे ? लकिन मे कसम खाइटु मोर डाई-मभ्फलन् घर फुटैठा कना दोषी देखा जाइठ । मै मभ्फला हुं अपनेन्हे यां मभ्फला छावा कब्बु छोर्के नै जाई । अपनेन्से अंशा नै मागी ।

पोर सालद अघनके अन्तिम अट्वार मै वर्दिया जिल्लाक बेचैपुर गाँउ गैल रहु । उहाँक रामसिंह थारु (गुलरिया नगरपालिकाके कर्मचारी) के परिवार अक्के घरेम अभिन ६८ जने वटां । यी माघेम फेन घर बटना सवाल नै हुइन् । मिलजुलके बैठ्ना टे मजा हो ना मोर डाई ।लकिन ओत्रा परिवार हाली हाली बढ्ना कारण अपनेहस् जन्नी मनैन्के जिद्वी फेन हो । उ घरक उक जोडी छाइक अश्रामे ९ छावा बना देला । देखि तमाशा । का अपने नटिवक् अश्रामे ९ नतिन्यन् देखक चाहटी ? पक्के फेन ओइसिन नै चाहठुइबी काहुन । चाहठुइवी कलेसे बुझीना यी मभ्फिल्कुक् बाट ।

इहे पुष १७ गते से अमरिक्वनके लावा वरष सन् २००७ जनवरी लागल । ओइने जनवरी १ हे लावा वरष मन्ठां । जस्टे यहां बैशाष १ गते लावा वरष मान जाइठ । लकिन थारुनके लावा वरषका माघ १ गते नै मन्ना चांही ? मोर डाई मोर गांउक ठांउक लर्कनहे संभ्हाई परल । पुंछे परल की तुहिनके लावा वरष कौन हो ?

मोर बाबा ओ मोर बर्का दादु संगे अक्के कक्षम क्याम्पस पढ्लकबाट

'किसानके जीवन'

किसान हमार पुर्खौलि पेशा हो तर केन
किसान मन जो जीवन वितैती बाटी आज,
कामसे फुर्सद कब्बुफेन नई मिलथ तर फेन
काम त अईती रहत खचा खच ।

जग्गा कलक घरबास केल बाट तर
ज्वाट क्वार परथ तिन चार विगाहा,
अतरा मेहनत करती करती काकर
पाईपरथ हमन् आधा हिसा ।

जव बदरिमसे पानी धर्तिम आई लागी
हम्र किसान निकर जैवि ज्वात खेत्वम,
काम कर्ति रमैति तर केन डत्करावनके
पत्ता नहि पैवि घाम लाग जाईथ मत्थ्वम ।
तरसे रहि हिला व पानी
उप्परसे रही चहकार घाम,
हात ग्वारा सर्लसेकेन यिह हो
हमार किसानके सद्दक काम ।

अत्रा मेहनत कर्लक हमार
अमृत जसिन पखरक दाना,
वर्ष भरिक ऋण तिर परथ
घरम क्वार नै हो एक जुन खैना दाना २

–जीत राम (जितु) चौधरी
धधवार–९ मेरैया, बर्दिया

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

श्री सिन्हा प्राथमिक विद्यालय बेलभार
परिवार

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

श्री वाल बिद्या प्रा.वि. सिमरहवा
परिवार

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

श्री प्राथिक प्रा. वि. जब्दी
परिवार

ढाईहि माघक-शुभकामना
मोर डाई सेवा ढोग

प्लाइउडके बेन्हवाले बेह्रल छुटमिुटी कोन्टीम देशके राज्धानी काठमाण्डोंमे कुरभुराइल बटु मोर डाई । यहा बहुट जार बा, छोटमे जार भगाइथकलक तोहार गतिया परैलक मै अभिन नै बिसरैले हु । अहपने भान्सा करि ते ठेटठी उस्का-उस्का चुल्हीम लकेरलक, अपने उमेर संगक गाँउक लर कन सँगे कन्डा (गुईठा) बिने गइलक मही आफु अस लागथ ।

मघहा आलु कोरके पस्कक भौगरिम भठारके तल्ले आलु खैलक फोफता साइत अयिभन हुई । जब जब माघ आइथ, मै गाउँक संघरियनसे बरका लदिया (राप्ती) मे बगाले बगाल भिन्सहरी लहाई गैलक समझके लग्लगैथुं । उ लग्लग्गीक् कत्रा मैयां प्रेम रहे, थरथरैठी कोन्टीम् धैल चाउर, नोन, दाल छुओ, डाई बाबक आर्शिवाद लेउ । ओत्रा किल नाही गाउँभरिक मनैन् सेवा लागेजाऊ । लमक्वा ढिकी खाऊ । माघक गुरी गुरी जाँर ओ सुरीक शिकार ते का वयान करे, मोट्टैल सुरीक शिकार आगीम् झरझर भुज्लक ओ चट्नी मिलाके पक्वा खैलक मोर गाँउ देउखर छुट्की घुमना मै कैसिन बिसराई सेकम मोर डाई ।

ओईसिन टे छोटेमे सुरीक शिकार आईवेर अंट्कलक बाद अपने भुजल पक्वा फेन छुटि छुटि छिम्मर बना दि । जिउ रिज्वाईल ते मै सुरीक शिकार खाईक फेन छोड देलु । पोछे साहितय जाने जुकुर हुइलु टे उपनाउँ सर्वहारी लिखा लेलु । आउर चिजिक शिकार टे सर्वहारी होके छोरे फेन नै सेक गैल ।

वुदु बाबक सँगे अक्के खोरियम् जाँड दारु पिलक महि सपनाईअस् लागठ । लेकिन सपना विपना वन गैल । मै बरी पहुनी खैनाहा हो गैलु । बरी जाँड दारु पिनजाहा हो गैलु लकिन अपने मुह फोरके कबो नै कली छावा ऐसिक अन्धाधुन्ध का करे पिथो ? हो, बाबा कभु काल्ह जरुर कहे आपन इज्जत बेज्जत हेरहो । जिउक ख्याल करहो, सक्करहिसे जिन पिहो मायलु छावा । लकिन खै यी सरभरहा मन, दशिया आए या देवारी । माघ टे झन सक्करहीसे मच्चहीक लक आइना । चाकर टाँग करैही पर्ना । भुरी करैयक पेंदी ओंधैही पर्ना ।

मोर प्यारी डाई, का अपनेन् यी बाट सुनके फरहनने खुशी नै लागि ? कि मै जाँड दारु पिनजा जात्रीसे ढिला डेले बतु । आईसिन टे अपनेन्के फेन

बुढिया-वुढुवा जाड-दारु, शरशिकार माछ माच्छी छोर्के मथूरा हरिद्धार जाके जय जुरुदेव बन रख्ली । छावा फेन हमारे लाईनमे आए कना अपनेन्के सोचाई रहे । मै जय गुरुदेव टे नै बनम डाई, लकिन असिन काम नै करम कना अपनेन्के सोचाई रहे । मै जय गूरुदेव टे नै बनम डाई, लकिन असिन काम नै करम जिहीसे अपनेन्के नाउँ माटीमे मिले । 'सर्वहारी' मनै, सक्कु चीज एक्फाले छारे फेन टे नै बन्थो ।

मोर तीनथो छाईछाई वटां, अपने नटिवा देखक चहठी । का छाई-छावा वरावर नै हुइत मोर डाई ? हम्रे तीन भाई, अक्केठो बहिन्या ? अपने टे सक्हुन बरोबर मानी ? फेन नतिवर अश्रा काकरे लागटी ? अपनेक छाई और घर चल्लौल, पल्ना टे छावन हुइट । अपनेक पटुहिया फेन ओस्टे सोचठ, तीन छाईन विदा कैकै महम्रे बुढिया-बुढवा कोन्वम् कुरभुराइल रहब । नाही एकथो छावा टे चाहै चाही । आप मै ससुइया पटुहियन कैसिन संभाऊ ? अपनेक् बर्का छावा अण्डा बच्चा लेके अल्गे हो रख्ला । माघ महिना ना हो, घर फुट्ना महिना । और छावन् फेन अल्गाई सेकठां । अल्गाके, घर फुट्के व जन्नी लेके, अंशा लेके और ओर चल्जैना छावा मनैन्के अपने अश्राका करे कर्ठी, बटाई टे ? लकिन मे कसम खाइटु मोर डाई-मभ्कलन् घर फुटैठा कना दोषी देखा जाइठ । मै मभ्कला हुं अपनेन्हे यी मभ्कला छावा कब्बु छोर्के नै जाई । अपनेन्से अंशा नै मागी ।

पोर सालद अघनके अन्तिम अट्वार मै बर्दिया जिल्लाक बेचैपुर गाँउ गैल रहु । उहाँक रामसिंह थारु (गुलरिया नगरपालिकाके कर्मचारी) के परिवार अक्के घरेम अभिन ६८ जने वटां । यी माघेम फेन घर बटना सवाल नै हुइन् । मिलजुलके बैठ्ना टे मजा हो ना मोर डाई ।लकिन ओत्रा परिवार हाली हाली बढ्ना कारण अपनेहस् जन्नी मनैन्के जिद्दी फेन हो । उ घरक उक जोडी छाइक अश्रामे ९ छावा बना देला । देखि तमाशा । का अपने नटिवक् अश्रामे ९ नतिन्यन् देखक चाहटी ? पक्के फेन ओइसिन नै चाहठुइबी काहुन । चाहठुइवी कलेसे बुझीना यी मभ्किल्कुक् बाट ।

इहे पुष १७ गते से अमरिक्वनके लावा वरष सन् २००७ जनवरी लागल । ओइने जनवरी १ हे लावा वरष मन्ठां । जस्टे यहां बैशाष १ गते लावा वरष मान जाइठ । लकिन थारुनके लावा वरषका माघ १ गते नै मन्ना चांही ? मोर डाई मोर गांउक ठांउक लर्कनहे संभाई परल । पुंछे परल की तुहिनके लावा वरष कौन हो ?

मोर बाबा ओ मोर बर्का दादु संगे अक्के कक्षम क्याम्पस पढ्लकबाट

टे अपनेन् पत्ता बा ना मोर डाई । अपने पढ्टी-लिखटी का करे ढिला डेलि मोर डाई । स्वास्थ्य स्वयमसेविका हुई अपने ।

तालिम जैठि टे नाउँ टे लिख लेठी, मने कहलक बाट कापीमे सारे नै सेक्ठी ? बुढाईल सुग्गा कहाँ लग पढम् ना कहबी बिन्ति बा मोर डाई । जब छावा बाबा अक्के कक्षम संगे पढे बनठ कलेसे ससुईया पटुहिया फेन टे अक्के कक्षम संगे पढे बनि काहुन् । मोर डाई यी चिट्ठी और जनहनसे नाहीं अपनेहे पढ्ना सिखके उदाहरण देखाई । अपनेन्हे माघक शुभकामना ।

वाबाहे हेंचकी लग्ना मेर्के संभ्कना कैह देबी । ओ, कैह देबी कि पटुहिया तुही ओ मही छावा संगे पढ्ने कले बा ।

अपनेक मभ्किल्का छावा
कृष्णराज "सर्वहारी"
कीर्तिपुर, काठमाण्डौं

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औ अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

ईन्सेक, कार्यक्रम कार्यालय बर्दिया
परिवार

लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा

✍ कविराम थारु

उठो हो जनता उठो..... गाउँ गाउँसे जुटो
(गाउँ गाउँसे उठो जनता)^{२} उठ पनर्पाबा.....
लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा

लोकतान्त्रिक गणतन्त्रम (जातिय स्वशासन)^{२}
संघिय सरकार रहि (केन्द्र से संचालन)^{२}
(बाहुनवादी अहंकार टुर पर्नाबा)^{२}
लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा
हो लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा

दासताके जंजिर टुरटी (कमैया दादु उठो)^{२}
चुल्हो चौका छोरकन (भन्सहरी भौजी जुटो)^{२}
(थरुवान प्रदेशम सत्ताचलाई पर्नाबा)^{२}
लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा
हो लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा

महान बीर शहिदनके (सपना पुरा करक लाग)^{२}
गरीवनके वस्तीमन (लाल झण्डा गारक लाग)^{२}
(शामन्ती राजतन्त्र ध्वस्त पर्नाबा)^{२}
लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा
हो लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्नाबा

❖

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औ अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

क्षितिज मेडिकल बैदी बर्दिया
परिवार

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औ अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

जिल्ला पशु सेवा कार्यालय बर्दिया
परिवार

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औ अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना न्यक्त करति ।

यूनिक नेपाल बर्दिया
परिवार

आपन भाषा साहित्य संस्कृती संरक्षण विकासक लाग काम करती जातिय तथा वर्गीय मुक्तिक डगरम नेङगटी रलक हमार तमाम गोचाली हुकन राज्य पक्षसे गैरजिम्मेवारी पूर्वक वेपत्ता पारगैल बा बर्दिया जिल्लाके वेपत्ता थारू नागरीक हुक्र

क्र.सं.	वेपत्ता व्यक्तिके नाम : (Missing Persons Name)	ठेगाना (Address)	पक्राऊ कर्लक व्यारेक/चौकी (Arresting Barrack / Static	पक्राउ मिति : (Arresting Date)	पक्राउ कर्लक ठाउँ (Arrest Place)
१	सगुनलाल चौधरी	धधवार गा.वि.स. -९ सेमरहवा	चिसापानी (बाँके)	२०५८/९/१२	धधवार ९ बैदा से
२	भीमबहादुर चौधरी	धधवार गा.वि.स. -३ कतर्निया	रम्मापुर (बर्दिया)	२०५९/१/४	घरसे
३	चैतेलाल चौधरी	धधवार गा.वि.स. -८ (ख) वेलभार	चिसापानी (बाँके)	२०५८/९/५	मगरागाडा २ जङ्गटवा
४	राजनकुमार चौधरी	धधवार गा.वि.स. -८ (ख) वेलभार	चिसापानी (बाँके)	२०५८/९/५	" "
५	हरिवहादुर चौधरी	धधवार गा.वि.स.-८ (ख) वेलभार	नेपालगंज (बाँके)	२०६०/९/२३	नेपालगंज वि.प.
६	सीताजानकी चौधरी	धधवार गा.वि.स. -८ (ख) वेलभार	चिसापानी (बाँके)	२०५८/९/५	मगरागाडा २ जङ्गटवा
७	चमारी थारु	धधवार गा.वि.स. वडा नं.-७ दुध्धा	रम्मापुर (बर्दिया)	२०५९/२/१	घरसे
८	धनीराम चौधरी	धधवार गा.वि.स. -७ दुध्धा	रम्मापुर (बर्दिया)	२०५८/१२/२७	घरसे
९	तेजवहादुर थारु	धधवार गा.वि.स. -७ दुध्धा	रम्मापुर (बर्दिया)	२०५८/१२/२७	घरसे
१०	राजवहादुर चौधरी	धधवार गा.वि.स. -७ थानफेना	रम्मापुर (बर्दिया)	२०५८/१२/७	घरसे
११	राजकुमार चौधरी	धधवार गा.वि.स. -४ गुमस्ता	रम्मापुर (बर्दिया)	२०५९/३/२९	कर्तनियासे

१२	जीतवहादुर चौधरी	मगरागडी गा.वि.स. -८ रम्मापुर	रम्मापुर (बर्दिया)	२०६०/६/१७	घरसे
१३	चुल्हवा थारु	मगरागडी गा.वि.स. -१ सदाशी	रम्मापुर +चिसापानी	२०५८/५/१	घरसे
१४	रामकिसुन थारु	मगरागडी गा.वि.स. -१ तर्कापुर	" "	२०५९/६/१४	घरसे
१५	जग्गु थारु	मगरागडी गा.वि.स. -५ सोनपुर	" "	२०५९/४/२६	घरसे
१६	जगतराम थारु	मगरागडी गा.वि.स. -५ सोनपुर	" "	२०५९/४/२६	घरसे
१७	जगना थारु	मगरागडी गा.वि.स. -५ सोनपुर	" "	२०५९/४/२६	"
१८	राम भरोसे थारु	मगरागडी गा.वि.स. -५ सोनपुर	" "	२०५९/४/२६	"
१९	टेटराम थारु	मगरागडी गा.वि.स. -५ सोनपुर	" "	२०५९/४/२४	"
२०	हरिराम थारु	मगरागडी गा.वि.स. -५ सोनपुर	" "	२०५९/४/२४	"
२१	वसन्त प्रसाद थारु	मगरागडी गा.वि.स. -४ मानपुर	" "	२०५९/५/१	"
२२	राजु थारु	मगरागडी गा.वि.स. -४ मानपुर	" "	२०५९/५/१	"
२३	रामप्रसाद थारु	मगरागडी गा.वि.स. -१ मगरागडी	" "	२०५९/५/१	"
२४	बीरबल चौधरी	मगरागडी गा.वि.स. -१ जयपुर	" "	२०५९/१२/२२	"
२५	बालकृष्ण थारु	मगरागडी गा.वि.स. -९ औरी	" "	२०५९/१०/१	"
२६	जिल्ला सन्देश चौधरी	मगरागडी गा.वि.स. -१ सदाशी	" "	२०५९/१०/१	"
२७	सियाराम थारु	मगरागडी गा.वि.स.-१ मगरागाडी	" "	२०५९/१०/१	"

२८	लक्षीराम थारु	मोतिपुर गा.वि.स. मदाहा	बाँसगढी (बर्दिया)	२०५८/१०/१२	"
२९	राधेश्याम थारु	मानपुर टपरा गा.वि.स. विक्रमपुर	सर्च, ग्रुप	२०५९/७/३	"
३०	हरिश्याम थारु	मोतीपुर, लवाडा	सर्च, ग्रुप	२०५९/५/७	"
३१	रुईना थारु	बेलवा, बेतहनी	चिसापानी	२०५८/९/१४	"
३२	पल्टा थारु	बेलवा, बेतहनी	चिसापानी	२०५८/९/१४	"
३३	सर्जप्रसाद थारु	बेलवा, बेतहनी	चिसापानी	२०५८/९/१४	"
३४	फूलाराम थारु	मानपुरटपरा जम्नाबोझी	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
३५	रुन्च्या थारु	" जम्नोबोझी	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
३६	अन्तराम थारु	" विक्रमपुर	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
३७	रामकिरण थारु	" जोगीपुर	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
३८	बचाली चौधरी	" जम्नोबोझी	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
३९	वसन्तु चौधरी	बदालपुर, जयपुर	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
४०	वसन्तु चौधरी	बदालपुर, जयपुर	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
४१	मंग्रा थारु	बदालपुर, झप्ती	सर्च ग्रुप	२०५९/७/४	"
४२	गोपाल थारु	बदालपुर, झप्ती	सर्च ग्रुप	२०५९/७/४	"
४३	लौटन थारु	बदालपुर, झप्ती	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"
४४	फहारे थारु	बदालपुर, जयपुर	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	"

४५	ज्योलाल थारु	बदालपुर, जयपुर	सर्च ग्रुप	२०५८/१२/१८	"
४६	श्रीराम थारु	ठाकुरद्वारा, हात्तीसार	ठाकुरद्वारा	२०५९/२/८	"
४७	सीता चौधरी	डेउढाकला, माछागढ	रम्मापुर	२०५९/९/१४	"
४८	सियाराम थारु	डेउढाकला, माछागढ	रम्मापुर	२०५८/७/	रम्मापुर से
४९	रजनी कुमारी चौधरी	सुर्यपटुवा, वर्कातरुवा	ठाकुरद्वारा	२०५९/१/४	घरसे
५०	बुधनी कुमारी चौधरी	सुर्यपटुवा, सोनाहा	ठाकुरद्वारा	२०५९/१०/१८	"
५१	चरत थारु	सुर्यपटुवा सोनाहा	ठाकुरद्वारा	२०५९/१२/१८	"
५२	तिलाप्रसाद योगी	सुर्यपटुवा डल्ला	ठाकुरद्वारा	२०५९/१२/२५	"
५३	रामदास थारु	बगनाहा, बर्गदाहा	ठाकुरद्वारा		भूरीगाउँ से
५४	हरिप्रसाद थारु	बगनाहा, वर्गदाहा	ठाकुरद्वारा	२०६०/१/६	डगरिम से
५५	भागीनाथ थारु	अनामनगर, खैरी	ठाकुरद्वारा	२०५९/७/१०	खेतसे
५६	दुर्गानाथ चौधरी	सुर्यपटुवा, वर्कातरुवा	सर्च ग्रुप	२०५९/१/४	घरसे.
५७	शिवचरण चौधरी	सोरहवा, जगतिया	ठाकुरद्वार	२०५८/८/२७	बाँसगढी से
५८	भगराम थारु	मोतीपुर, लवाडा	बाँसगढी (बर्दिया)	२०५९/५/६	घरसे
५९	लालबिहारी थारु	मोतीपुर, लवाज पिपलतारी	सर्च ग्रुप	२०५९/५/६	घरसे
६०	कलपट्टी थारु	मोतीपुर, लवाज पिपलतारी	सर्च ग्रुप	२०५९/५/६	घरसे
६१	क्रिम थारु	खैरीचन्दपुर, उत्तर खैरी	सर्च ग्रुप	२०५९	नेपालगंजसे

६२	प्रेम प्रकाश थारु	मनाऊ, नौरङ्गा	नेपालगंज व्यारेक	२०५८/१२/२९	घरसे
६३	निर्मल थारु	मनाऊ, बासपुर	टिकापुर	२०५८/११/१६	घरसे
६४	जगत प्रसाद थारु	मनाऊ, बासपुर	ठाकुरद्वारा	२०५८/११/१३	घरसे
६५	पतिराम चौधरी	खैरीचन्नपुर, मंगलपुर	टिकापुर	२०५८/१२/२९	घरसे
६६	कमला थारु	मनाऊ, नौरङ्गा	टिकापुर	२०५८/१२/२९	घरसे
६७	मोहनलाल थारु	मनाऊ, नौरङ्गा	भिम्मापुर	२०५८/१२/२९	घरसे
६८	राधुलाल थारु	मनाऊ, नौरङ्गा	भिम्मापुर	२०५८/१२/२९	घरसे
६९	भगौती थारु	खैरीचन्दनपुर, मंगलपुर	भिम्मापुर	२०५९/१२/२९	घरसे
७०	छुनलाल थारु	खैरचिन्दनपुर, हरिनगर	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	घरसे
७१	आशाराम थारु	मनाऊ, वेल्भरिया	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	पिकनिक से घुमवेर
७२	हिम्मत कुमार चौधरी	गुलरिया न.पा. बालापुर	गुलरिया जि.प्र. का.	२०५९/२/४	लालपुर दुध्धा से
७३	रामरति कु चौधरी	" "	गुलरिया जि.प्र. का.	२०५९/२/४	लालपुर दुध्धा से
७४	लहानु चोधरी	मातीपुर, दमौली	रम्मापुर	२०५९/५/१६	रम्मापुर से
७५	सीतापति चौधरी	सोरह्वा, दखिण भकारी	चिसापानी		महादेवपुर से
७६	भुखलाल चौधरी	मोतीपुर, दमौली	रम्मापुर	२०५९/५/१६	रम्मापुर से
७७	बुद्धिराम चौधरी	मातीपुर, दमौली	रम्मापुर	२०५९/५/१६	रम्मापुर से

७८	भवन चौधरी	मातीपुर, दमौली	रम्मापुर	२०५९/५/१६	रम्मापुर से
७९	शेरवहादुर चौधरी	भिम्मापुर, लालचीपुर	सर्च ग्रुप	२०५९/५/१६	घरसे
८०	लौती कुमारी चौधरी	मनाऊ, नौरङ्गा	टिकापुर	२०५८/१२/२९	"
८१	विष्णु चौधरी	मनाऊ, बेल्भरिया	ठाकुरद्वार	२०५९/७/२६	डगरिम से
८२	धनीराम चौधरी	मनाऊ, नौरङ्गा	टिकापुर	२०५८/१२/२९	डगरिम से
८३	सोनीराम चौधरी	मनाऊ, नौरङ्गा	टिकापुर	२०५८/१२/२९	डगरिम से
८४	चिल्लु चौधरी	मनाऊ, नौरङ्गा	टिकापुर	२०५८/१२/२९	डगरिम से
८५	घनश्याम चौधरी	मनाऊ, लोहागर	नेपालगंज	२०५८/११/२४	नेपालगंज से
८६	कुलप्रसाद चौधरी	पाताभार, बनकट्टी	ठाकुरद्वारा	२०५८/१२/६	घरसे
८७	गेदवा चौधरी	पशुपतिनगर पकरैया	ठाकुरद्वारा	२०५८/१२/६	घरसे
८८	ठाकुरप्रसाद चौधरी	पशुपतिनगर पकरैया	ठाकुरद्वारा	२०५८/१२/६	घरसे
८९	मोतीलाला चौधरी	बदालपुर, पहारीपुर	ठाकुरद्वारा	२०५९/७/५	घरसे
९०	खिर्मन चौधरी	भिम्मापुर, लालचीपुर	सर्च ग्रुप	२०५९/७/३	घरसे
९१	जानकी चौधरी	महम्दपुर, बिक्री	चिसापानी	२०५९/१/१०	यपुवागाउक [illegible]
९२	कृष्णप्रसाद चौधरी	महम्दपुर, बिक्री	नेपालगंज	२०५४/१२/२४	नेपालगंज से
९३	शुशिला चौधरी	खैरीचन्डनपुर, मंगलपुर	रम्मापुर	२०५८/१२/२९	घरसे
९४	कृष्णप्रसाद चौधरी	बनियाभार, जमनिहा	रम्मापुर	२०५८/३/२५	घरसे

९५	वेदप्रकाश योगी	सुर्यपटुवा, डल्ला	गुलरिया	२०५५/५/८	तुलसीपुर से
९६	पुष्पराज योगी	सुर्यपटुवा, डल्ला	ठाकुरद्वारा	२०५९/९/३	अम्मरपुर से
९७	कल्पना चौधरी	सुर्यपटुवा, डल्ला	ठाकुरद्वारा	२०५९/९/३	अम्मरपुर से
९८	खड्क बहादुर चौधरी	मोतीपुर, बाँसगढी	चिसापानी	२०५८/१२/६	घरसे
९९	हरिप्रसाद चौधरी	सुर्यपटुवा, डल्ला	ठाकुरद्वारा	२०५९/१/७	घरसे
१००	रुपलाल चौधरी	सुर्यपटुवा, डल्ला	ठाकुरद्वारा	२०५९/१/७	घरसे
१०१	पुर्णी चौधरी	बनियाभार, मुराहा	गुलरिया, जि.प्र.का.	२०५९/२/४	लालापुर दुहदासे
१०२	लौटन चौधरी	नयाँगाउँ, नयाँगाउँ	ठाकुरद्वारा	२०५९/७/४	घरसे
१०३	जयराम चौधरी	नयाँगाउँ, नयाँगाउँ	ठाकुरद्वारा	२०५९/७/४	घरसे
१०४	कालुराम चौधरी	नयाँगाउँ, नयाँगाउँ	ठाकुरद्वारा	२०५९/७/४	घरसे
१०५	शोभाराम चौधरी	ढोढरी, मधुवन	बेलुवा प्रहरी चौकी	२०५९/२/११	बादँरभरिया से
१०६	कालीराम चौधरी	मातीपुर, लवाडा	बाँसगढी	२०५९/५/६	घरसे
१०७	पतिराम चौधरी	मोतिपुर, दमौली	रम्मापुर (बर्दिया)	२०५९/५/१६	रम्मापुर से
१०८	देशराम चौधरी	बगनाहा, टक्या	बाँसगढी	२०५८/९/३	बाँसगढी से
१०९	धामु चौधरी	बगनाहा, बगनाहा	ठाकुरद्वारा	२०५८/१२/२७	घरसे

११०	तुलसीराम थारु	मोतीपुर, मदाहा	बाँसगढी	२०५९/१०/१२	घरसे
१११	तदुसपति चौधरी	सुर्यपटुवा, डल्ला	ठाकुरद्वारा	२०५९/७/	धनौरा से
११२	चन्द्रवहादुर चौधरी	भिम्मापुर, लालचीपुर	राजापुर	२०६०/७/३	घरसे
११३	खुशीराम चौधरी	बगनाहा, टकिया	ठाकुरद्वारा	२०५८/१०/७	गोनाहाना से
११४	ठग्गा थारु	मोतीपुर, मदाहा	बाँसगढी	२०५९/६/१५	घरसे
११५	दरवारी चौधरी	मोतीपुर, मदाहा	बाँसगढी	२०५९/६/१६	घरसे
११६	बाँधुराम थारु	मोतीपुर मदाहा	बाँसगढी	२०५९/६/१६	घरसे
११७	बाबुराम चौधरी	मोतीपुर, मदाहा	बाँसगढी	२०५९/६/१६	घरसे
११८	सोमप्रसाद चौधरी	पाटाभार, जनकनगर	बाँसगढी	२०५८/५/१९	घरसे
११९	खुशीराम चौधरी	बनियाभार, बेलवच्चा	रम्मापुर + चिसापानी	२०५९/९/५	मगरागाडी ३ जब्दहवा
१२०	रामनारायण चौधरी	पशुपतिनगर, पठरैया	रम्मापुर	२०५८/९/७	
१२१	आकाश चौधरी	नेउलापुर, सुजनपुर	ठाकुरद्वारा	२०५९/४/९	शाहीपुर से
१२२	लल्लुराम चौधरी	नेउलापुर, सुजनपुर	गुलरिया	२०५८/१०/४	घरसे
१२३	जनक चौधरी	बनियाभार, बेपत्तापुर	रम्मापुर + चिसापानी	२०५८/९/५	मगरागाडी ३ जब्दहवा

१२४	बसन्तु चौधरी	बदालपुर, जयपुर	राजापुर	२०५९/७/३	घरसे
१२५	बसन्ती चौधरी	सुर्यपटुवा, छोटकी तरुवा	सर्च ग्रुप	२०५८/१०/७	गोनाहाना से
१२६	गोमती चौधरी	सुर्यपटुवा, छोटकी तरुवा	सर्च ग्रुप	२०५९/१२/१५	गोनाहाना से
१२७	हिलराम योगी	सुर्यपटुवा, डल्ला	ठाकुरद्वारा	२०५९/ /	गोनाहाना से
१२८	कल्लु चौधरी	बगनाहा, बगनाहा	ठाकुरद्वारा	२०५८/१२/२७	घरसे
१२९	बलबहादुर चौधरी	बगनाहा, बगनाहा	ठाकुरद्वारा	२०५८/१२/२७	घरसे

वहा हुकनके खोजी के लाग राजनैतिक कार्य कर्ता, वकिल, मानव अधिकारवादी संस्था , ICRC मार्फत से सार्वजनिक करक लाग र दवाव दिहक लाग आह्वान करति । थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान कर्ति थारु जाति उप्पर हुइना शोषण दमन अन्याय अत्याचारके विरोध म आवाज उठैति शोषित पिडित जन्ता हुकन आपन हक अधिकार के लागक संगठित परना विचार लेक नेउलक अग्रज हुकनके वास्तविक स्थिति स्थायी शान्ती के प्रक्रियाम लोकतान्त्रिक सरकार फे सार्वजनिक नै कर्ना दुःख के वात हो । राज्य पक्षसे हुइना अमानविय, घृणित, निन्दनिय ओ अप्रजातान्त्रिक क्रियाकलाप बन्द कर्ति वास्तविक स्थिती सार्वजनिक कैक क्षतिपूर्ति दिह परथ कना गोचाली परिवार हार्दिक अनुरोध करता ।

सम्पादक परिवार

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औं अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबरम सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना व्यक्त करति ।

द्वन्द्वपिडित समिति बर्दिया

परिवार

गोचाली पत्रिका प्रकाशन के लाग सहयोग करुइया नामावली

क्र. सं.	नामावली	ठेगाना	र.न.	रु.	कैफियत
१	कृष्ण कुमार चौधरी	धधवार–४ बर्दिया	१०१	२०१	
२	पति राम थारु	धधवार–४ बर्दिया	१०२	१६५	
३	डिल कुमारी चौधरी	धधवार–३ बर्दिया	१०३	१६५	
४	कमल कुमार विष्ट	धधवार–६ बर्दिया	१०४	५१	
५	मन बहादुर विष्ट	धधवार–४ बर्दिया	१०५	५५	
६	बुद्धिराम चौधरी	धधवार–६ बर्दिया	१०६	३५	
७	चक्र बहादुर विष्ट	धधवार–४ बर्दिया	१०७	१०१	
८	श्रजिन चेतना प्रा.वि	धधवार–१ बर्दिया	१०८	१०१	
९	सुब्बा थारु	धधवार–४ बर्दिया	१०९	५०	
१०	हरिप्रसाद गिरी	धधवापर–३ बर्दिया	२०१	१५००	
११	जंग बहादुर चौधरी	धधवार–९ बर्दिया	२०२	१५१	
१२	हरि दत्त भट्ट	धधवार–९ बर्दिया	२०३	१०१	
१३	गणेश कुमार स्वाँर	धधवार–९ बर्दिया	२०४	१०२	
१४	मान बहादुर थारु	धधवार–९ बर्दिया	२०५	२०३	
१५	राम बहादुर थारु	धधवार–९ बर्दिया	२०६	२०५	
१६	ठग्गु प्रसाद थारु	धधवार–९ बर्दिया	२०७	१०१	
१७	ठग्गुराम चौधरी	धधवार–९ बर्दिया	२०८	१०५	
१८	आशाराम चौधरी	धधवार–९ बर्दिया	२०९	१०५	
१९	लाल बहादुर थारु	धधवार–९ बर्दिया	२१०	१०५	
२०	भरत चौधरी	धधवार–९ बर्दिया	२११	१०१	
२१	चौधरी थारु	धधवार–९ बर्दिया	२१२	१०९	
२२	कुल बहादुर चौधरी	धधवार–९ बर्दिया	२१३	१०५	
२३	राम बहादुर थारु	धधवार–९ बर्दिया	२१४	१०१	
२४	रमेश चन्द्र ज्ञवाली	गु.न.पा	२१५	१०५	
२५	नन्दराज सुवेदी	गुन.पा	२१६	१५८	
२६	युवक मा.वि.	वनियाभार, जोगीगाउँ	२१७	५००	

२६	युवक मा.वि.	वनियाभार, जोगीगाउँ	२१७	५००	
२७	क्षेत्रराज सुवेदी	गु.न.पा.	२१८	५१	
२८	निरञ्जन कु. चौधरी	धधवार–९ सेमरहवा	००१	८५५	
२९	सुबास चौधरी	धधवार-८ फयकहवा	००२	७०	
३०	जग्गु प्रसाद चौधरी	धधवार-९ मेरैया	००३	२१०	
३१	मोती कुमार चौधरी	धधवार-९ सेमरहवा	००४	१५१	
३२	जग्गु प्रसाद चौधरी	धधवार-८ फचकहवा	००५	५०	
३३	देवेन्द्र राज शर्मा	धधवार-८ फचकहवा	००६	६०	
३४	सुखीराम चौधरी	धधवार-८ फचकहवा	००७	५५	
३५	खुसीराम चौधरी	धधवार-८ बेलभार	००८	१०५	
३६	मिम ब. खड्का	धधवार-४ बैदी	०५१	१०१	
३७	युव राज गौतम	धधवार-२ बोलकभार	०५२	५१	
३८	टिका राम के.सी.	धधवार-४ बैदी	०५३	५१	
३९	मदन प्रसाद सुबेदी	डेउढाकला-७ लक्ष्मणा	०५४	१११	
४०	कृष्ण ब. थापा	धधवार-४ बैदी	०५५	१०१	
४१	मान ब. चौभरी	पदनाहा-२ जगतिया	०५६	१२१	
४२	प्रेम प्रसाद चौधरी	धधवार-४ बैदी	०५७	१०१	
४३	लक्ष्मी नारायण चौधरी	धधवार-४ बैदी	०५८	५५	
४४	महेन्द्र ठाकुर	धधवार-९ बैदा	०५९	४५	
४५	यज्ञ राज भट्ट	धधवार-६ बनगाई	०६०	९९	
४६	जयन्ती शर्मा	धधवार-४ बैदी	०६१	५१	

४७	भोजराज पोखरेल	ढोढरी-१	०६२	१११	
४८	छवीलाल पोखरेल	धधवार-४ बैदी	०६३	५१	
४९	बन्धुराम थारु	धधवार-४ बैदी	०६४	१०१	
५०	श्री जन सेवा मा.वि.	धधवार-८ बेलभार	०६५	१०००	
५१	गोपीलाल चौधरी	जि.सि.का. बर्दिया	०६६	१५१	
५२	चुडामणी पौडेल	धधवार-४ बोकलभार	०६७	५०१	
५३	धनीराम चौधरी	नेउलापुर-३ वर्मला	०६८	५१	
५४	फुलपाती चौधरी	मगरागाडी-३ धोविया	०६९	१३५	
५५	कृष्ण बहादुर चौधरी	बनियाभार-५ जोगिगाउँ	०७०	५५	
५६	जग्गु प्रसाद चौधरी	मोतीपुर-७ सतरहिया	०७१	१५०	
५७	दिपक अधिकारी	मोतीपुर-४ अस्नेहरी	०७२	५१	
५८	राम गोपाल थारु	देउडाकेला-७ लक्ष्मणा	०७३	५१	
५९	गायत्री थापा	काभ्रे-३ नुम्लेपानी दाङ्ग	०७४	३०	
६०	भिष्म चौधरी	तुलसीपुर-६ दाङ्ग	०७५	७	
६१	नेपालु चौधरी	पवेरा-३ बिसनपुर कैलाली	०७६	२५	
६२	आशाराम चौधरी	बेस बर्दिया	०७७	४०	
६३	विष्णु चौधरी	नेउलपुर-१ कर्मला	०७८	१०१	
६४	श्रीराम चौधरी	धधवार-५, जब्दी	१५१	१०१	
६५	जयप्रकाश चौधरी	धधवार-५, सुन्तीपुर	१५२	५१	

६६	रामबहादुर पाण्डे	धधवार-५, जब्दी	१५३	५१	
६७	बुद्धिराम चौधरी	धधवार-९ मेरैया	३५१	५१	
६८	रत्नराज खनाल	धधवार-३	३५२	५१	
६९	प्रेमप्रसाद पोखेल	पदनाहा-५ सोह्रविघा	३५३	५१	
७०	नैन सिंह थारु	धधवार-३ कतर्निया	३५४	५१	
७१	राम मण्डल	धधवार-६ बनगाई	३५५	१२	
७२	शालिकराम भट्टराई	धधवार बर्दिया	३५६	५१	
७३	तिलक प्रसाद रिजाल	मोतीपुर बठुवा	३५७	५१	
७४	शुकराम थारु	धधवार-३ कतर्निया	३५८	५१	
७५	कालीदास चौधरी	मनाउ बर्दिया	४५१	२०	
७६	हरिलाल चौधरी	गोला बर्दिया	४५२	२५	
७७	श्रीमति बुद्धिमाया बस्याल	खैरी हे.पो.	४५३	२०	
७८	तुल्सीराम पोखेल	खैरी हे.पो. बर्दिया	४५४	२०	
७९	भरत चौधरी	धधवार बर्दिया	४५५	५१	
८०	हरिराम चौधरी	धधवार खैरेनी	४५६	४९	

शुभकामना

थारु जातिनक लौव वरष तथा बरका तिउहार "माघ" के उपलक्ष्यम व थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचाली" क १४ औ अंक प्रकाशित हुइना । खुसीक खबर म सक्कुनक सुःख सम्बृद्धि सु-स्वास्थ्य व प्रगतिक लाग हार्दिक मंगलमय शुभ कामना व्यक्त करति ।

धधवार गा.वि.स. परिवार